गुलाम जैसी जिंदगी जीने को मजबूर... पेज 5

दैनिक कारखाने का सफर

मुकाबले के चक्कर में आदमी का जीवन एक कारखाने के समान हो गया है, आदमी का सबसे विश्वसनीय अखबार

वर्ष 6, अंक 101 | भोपाल, गुरुवार 23 अक्टूबर, 2025 | कार्तिक शुक्ल पक्ष, द्वितीया, 2082 | मूल्य 2 रुपए

भाई दूज पर तिलक लगाने का शुभ मुहूर्त... पेज 7

(श्रृंखला -12)

भेल कर्मचारियों की सहकारी संस्था बीएचईई थ्रिफ्ट एंड क्रेडिट को-आपरेटिव सोसायटी में पटाखों के बाद शांति की लहर

- सोसायटी में घमासान के बीच ठंडे पड़ते दिख रहे हैं शब्दों के बाण और प्रबंधन में सुगबुगाहट से भी हथियार डलते दिख रहे हैं
- एक कदम तुम बढ़ो और एक कदम हम बढ़ें की तर्ज एक दो दिन में स्थिति सामान्य होने की संभावना बढ़ी
- एक दूसरे ने घमासान में एड़ी से चोटी तक का जोर लगाया, लेकिन न तो एड़ी पीछे हटी और न हीं चोटी उखड़ पाई
- अब सामने बात यहां तक आ रही है कि संस्था की साख का अगर ध्यान होता तो राजनीति चरम पर नहीं होती
- एक दूसरे को नीचा दिखाने के चक्कर में संस्था की छवि नीचे चली गई और शासन प्रशासन तक की जोर आजमाइस की गई और अंत में हार सब गए, जीत मानकर शांत हो गए
- बाहर से चल रही राजनीति का भी असर कम होने से घमासान का असर उस तरह से कम हुआ जैसे मानसून विदा हो गया
- अब सबसे बड़ा सवाल यह है कि व्यवस्थाओं में बदलाव आएगा या वही विवाद की जड़ बनीं गलत नीति चुनाव को बचे ढाई साल चलती रहेंगी

दैनिक कारखाने क सफर । भोपाल

भेल कर्मचारियों की खून पसीने से सींची गई बीएचईई थ्रिफ्ट एंड क्रेडिट को-आपरेटिव सोसायटी में विवादों की आई सुनामी के बाद शांति की लहर दिखाई देने लगी है। इसकी एक झलक बुधवार को उस समय देखने को मिली, जब सोसायटी के एक प्रबंधक की रिटायरमेंट के मौके पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। सभी 11 संचालको में से 10 मौके पर उपस्थित हुए और आपस में घुलमिलकर बात की और दिल से भले ही न हो, लेकिन खिलखिलाकर हंसी भी चेहरे पर देखी गई। एक सूत्र के अनुसार चेहरे पर मुस्कान का

सबसे बड़ा कारण था कि पूरे घमासान में न तो कोई किसी को हरा पाया और न ही कोई अपनी जीत मान पाया। इस संबंध में अपुष्ट खबरों के अनुसार भेल प्रबंधन ने इशारा किया है कि बहुत हुआ अब मामला शांत करो। वहीं सोसायटी संचालक मंडल भी तैयार हुआ है कि पक्ष और विपक्ष बैठकर मामले को हल करेंगे और पर्चेज सहित अन्य कमटियों का भी गठन किया जा सकता है। कुछ संचालक छठ पूजा मे कल से व्यस्त हो जाएंगे, उसके बाद सभी बैठकर मामले को शांत करेंगे, लेकिन अभी इसको पक्का नहीं माना जा सकता, जब तक कागजो पर कुछ दिखाई न दे जाए। क्योंकि कोई किसी से कम अपने आपको नहीं आंक रहा है। कांच के घर में पत्थर किसने फेंका, सब जानते हैं, लेकिन कांच सिर्फ संस्था को लगा। क्योंकि सभी संचालक एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। संस्था की वो छवि खराब हुई कि उसके बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता। किसने कितना संस्था की छवि को नुकसान पहुंचाया, इसका उल्लेख दैनिक कारखाने का सफर अखबार में क्रम के अनुसार शुरू किया जाएगा।

आज हम दे रहे हैं संचालक निशांत कुमार नंदा का इंटरव्यू। इनकी बात को सभी साढ़े चार हजार सदस्य सुनना चाहते हैं। क्योंकि कई संचालकों ने बेबजह इन पर आरोप लगाए थे।

विश्वास, समर्पण और आत्म सम्मान के साथ संस्था और सदस्य हित सर्वोपरि!

बीएचईई थ्रिफ्ट सोसायटी में हुए घमासान में संस्था का अर्थ है मेरे विचार से "सदस्यों की आस्था"

इस का अर्थ है उस संस्था के नियमों और मूल्यों के प्रति सदस्यों का विश्वास, समर्पण और आत्म सम्मान। यह आस्था उस संगठन के मिशन और लक्ष्यों को आगे बढ़ाने के लिए सदस्यों को प्रेरित करती है। संस्था और सदस्य हित सर्वोपरि। यह विचार निशांत कुमार नंदा के हैं, जिन्होंने दैनिक कारखाने का सफर अखबार से खुलकर बात की और सवालों के जवाब दिए। उनका एक ही बात पर जोर दिया कि संस्था और सदस्य हित सर्वोपरि।

सवाल- वरिष्ठ उपाध्यक्ष क्यों बने और इस पद से इस्तीफा क्यूं देना पड़ा?

जवाब-देखिए हमें तो अध्यक्ष बनाने के लिए कुछ लोग मेरे पीछे पड़ गए थे। क्या क्या प्रेशर नहीं दिया गया। विभिन्न सूत्रों के जरिए,प्रेशर दिया गया, पर मुझे कोई भी स्वार्थ या लालच नहीं है न कभी होगा किसी भी पद के लिए। पर सेवा की भावना रखते हुए सर्वदा निस्वार्थ सदस्यों हित संस्था हित के लिए सेवा देता रहूंगा। ऐसा है कि विगत डेढ़ महीने से संस्था की स्थिति में असंतुलन की स्थिति बनी हुई थी, जो किसी से छुपी नहीं है। कुछ संचालकों के द्वारा संस्था मे ताला लगाया जाना, उपाध्यक्ष द्वारा अध्यक्ष की कुर्सी पर बैठ जाना, सत्ता पक्ष संचालक गणों के बीच बहुत ज्यादा बाद विवाद उत्पन्न होना, संस्था के लिए उचित वातावरण नहीं था। इसके साथ साथ आम सभा का आयोजन 30 सितंबर के अंदर करना व सदस्यों को समय पर लॉन देना एफडी व आरडी का भुगतान करना। साथ ही लाभांश बांटना और, इस तरह की कई सारे वित्तीय गतिविधियों को सुचारू रूप से करने के लिए, जिसमें सम्माननीय सदस्यों का हित जुड़ा हुआ था। बीएचईएल में कर्मचारी और अधिकारी वर्ग मिलाकर कुल 4388 जनशक्ति है, इनमें से 31 मार्च तक 4347 (99%) बी.एच.ई.एल कर्मचारी और अधिकारी इस संस्था में सहकारिता का उद्देश्य से संस्था में सदस्यता लेकर जुड़े हुए हैं।

इसीलिए संस्था ओर सदस्यों हित सर्वोपरि है, इसी को मद्दे नजर रखते हुए व वि को कम करने के लिए हम पांच संचालकों ने अध्यक्ष को सहयोग किया। इस प्रकार बहुमत के आधार पर छह संचालक साथियों ने 09 सितंबर 2025 में हुई संचालक बोर्ड बैठक में निष्पति लिया और बहुमत से वरिष्ठ उपाध्यक्ष और किरण को सचिव बनाया गया। साथ ही सिग्नेचर ऑथोरिटी भी दिया, ताकि संस्था सुचारू रूप से चले। इस प्रकार से वरिष्ठ उपाध्यक्ष बना। ये नई बात भी नहीं है पहले भी 2015 में इस प्रकार हुआ था। उस समय उपाध्यक्ष पद में गौतम मोरे थे और किरण सिंह को वरिष्ठ उपाध्यक्ष बनाया गया था। 12 से 15 दिन बढ़िया हमारे सिग्नेचर से एचईटी एसबीआई बैंक में संस्था की वित्तीय गतिविधियां चली। सदस्यों को लोन एफडी और आरडी का भुगतान भी हुआ, कोई परेशानी नहीं थी और कोई भी ऑब्जेक्शन बैंक की तरफ से नहीं आया। परंतु उपाध्यक्ष एवं चार संचालक साथियों द्वारा ऑब्जेक्शन लिया गया। एचईटी एसबीआई बैंक में शिकायत की कि वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद नया बनाया गया है और ये संवैधानिक नहीं है। ये ऑब्जेक्शन पोस्ट द्वारा बैंक भेजा गया था एवं बैंक ने उसी का आधार बनाकर संस्था की अकाउंट फ्रिज कर दिया। इसके पश्चात संस्था द्वारा सारे मैंडेट दिया। बैंक से तत्पश्चात अकाउंट फ्रिज हट गया। लेकिन ये संचालक साथियों ने पुनः बैंक में जाकर आपत्ति लगाई और अकाउंट को फिर से फ्रिज कर दिया, जिसमें संचालक रजनीकांत चौबे ने हस्ताक्षर नहीं किया था। इस प्रकार से इनके कृत्य से सदस्यों को फिर से असुविधा हुई। क्योंकि सदस्यों को लॉन एफडी एवं आरडी का भुगतान नहीं हो पा रहा था। इसलिए हमने अपने पद को त्याग दिया और संस्था और सदस्यों की हितों को देखते हुए खुशी खुशी पद से इस्तीफा दिया, ताकि अकाउंट फ्रिज जल्दी हटे।

परंतु दुःख की बात यह है अभी भी अकाउंट का फ्रिज नहीं हटा। इसका जवाब निश्चित रूप से सम्माननीय सदस्य समय पर देंगे। पर खुशी की बात यह है कि आम सभा में किये हुए घोषणा के अनुसार सदस्यों को डिविडेंड में एक प्रतिशत बढ़ा कर 16% लाभांश बांटा और लोन ब्याज दरों में 0.5 प्रतिशत कम किया एवं जिन सदस्यों के पास दो शेयर था उनको बढ़ाकर 10 शेयर और नया सदस्यता लेने वाले साथियों को डायरेक्ट 10 शेयर देने की निष्पति ली गई, जिसका लाभ सदस्यों को अभी मिला और मिलता रहेगा।

सवाल- किस समस्या से संस्था संचालकों के बीच असमंजस पैदा हुई और क्यों ?

निशांत कुमार नंदा

जवाब- मेरे ख्याल से समस्या को बढ़ाने से अच्छा है समस्या का हल ढूंढ कर समाधान करना चाहिए। क्योंकि मैंने उस समय देखा है, जिस समय चुनाव का माहौल था। सन 2022 में और सभी पैनल के उम्मीदवार प्रत्याशी एवं उनके समर्थक सदस्य कितना आरोप प्रत्यारोप लगा रहे थे। विशेष कर अध्यक्ष बसंत कुमार के ऊपर। परंतु जनता जनार्दन ने अपना बहुमूल्य वोट के माध्यम से उन प्रत्याशी को जिताया, जिनसे उनकी उम्मीद जुड़ी हुई थी, ताकि संस्था सुचारू रूप से चले। इस चुनाव में सबसे ज्यादा 1210 वोट अध्यक्ष बसंत कुमार को मिला। क्या गजब का निर्णय है जनता द्वारा जीस अध्यक्ष को सभी ने भ्रष्टाचार और पता नहीं क्या-क्या आरोप प्रत्यारोप लगाया। वही अध्यक्ष को सबसे ज्यादा वोट मिला और वो अध्यक्ष पद में फ़िर से आ गए। जबकि इनके साथ जो पैनल में आखिरी समय पर चुनाव लड़े ये, लोग भी कोई कसर नहीं छोड़ा था, इनको आरोप लगाने में। इन लोगों ने पहले से ही घोषित किया था कि बसंत कुमार अध्यक्ष बनेंगे। इनके साथ चुनाव जीते भी, पर अब ऐसा क्या हो गया, कि वो वादा निभा नहीं पाए और पूरा सत्ता भी चला नहीं पाए।, ये आज सदस्यों के लिए समझ से परे है। लगता तो यह है पैनल जब बनाया होगा, सारे कसमें वादे भी किए होंगे और तीन साल तक सत्ता में रहकर फायदा भी लिया होगा, पर ऐसा क्या कारण है कि जो इनकी सत्ता चल नहीं पाई। इसकी सही जानकारी अभी तक कोई दे नहीं पा रहा है, पर इसका जवाब गोलमोल दिया जा रहा है।

जहां तक मेरा अनुभव है, चुनाव जीतकर छह महीना नहीं हुआ था और मीडिया में आया था कि अविश्वास प्रस्ताव आ सकता है। पर ये अविश्वास प्रस्ताव क्यों उस समय में मीडिया में आया था, शायद कोई भी गहराई से नहीं जानने की कोशिश की होगी। उस समय इनको पूछा गया था ऐसा कोई बात हो तो बताइए, साथ मिलकर युवा संचालकों का सत्ता बनाते हैं। पर गोलमोल जवाब दिया और सत्ता चलाया। लगता तो यह है कि शुरू से ही ये लोग कुछ लाभ लेने हेतु प्रयासरत किए होंगे पर नहीं होने के कारण इनका धीरे धीरे बॉन्डिंग खत्म हुई और धीरे धीरे वादविवाद बढ़ाकर ताला बंद करने तक पहुंचे । अभी जो अध्यक्ष के ऊपर आरोप कई तरह का लगा रहे हैं, ये सच में सदस्यों और संस्था हित हेतु सोचे होते तो ये पहली बार में ही कुछ न कुछ ठोस कदम उठाए होते पर नहीं किया और तीन साल तक क्यूं चुप रहे ये समझ से परे हैं।

सवाल- क्या अकाउंट फ्रिज करना सही निर्णय है?

जवाब- सदस्यों और संस्था के प्रति रतिभर भी चिंता न कर के संस्था का अकाउंट फ्रिज करना किसी के गले उत्तर नहीं रहा है।

यह पांच संचालक कहते फिर रहे हैं कि हमारी सिग्नेचर हटाने की कोशिश किया इसीलिए बैंक ने इनको गलत साबित कर अकाउंट फ्रिज कर दिया। लगता है बिल्ली जैसे आँखें बंद करके दूध पीती है और समझती है कि उसे कोई देख नहीं रहा है। ठीक इसी तरह ये सोच रहे हैं।

अध्यक्ष ने 9 सितंबर को संचालक बोर्ड बैठक बुलाई थी, इस बैठक में ये पांच संचालक क्यों नहीं रहे और उल्टा बैठक की निर्धारित समय में अध्यक्ष और बाकी संचालक को पिपलानी थाने में बुलाकर बेवजह समय व्यर्थ किया। पुरानी चुनाव के समय हुई एक केस को पिपलानी थाने में ओपन कराकर बाहरी राजनैतिक दबाव बनाके जबरन समय व्यर्थ किया।

जबकि चुनाव के छह महीने बाद कोई भी चुनाव संबंधित एलिगेशन/ दोषारोपण कर नहीं सकता, ये सबको पता है। फिर भी इन्होंने अध्यक्ष के साथ बाकी संचालक को भी नजरबंदी कक्षा में करीब एक डेढ़ घंटा रख दिया, ताकि समय बीत जाए और निर्धारित मीटिंग न हो सके। इसी दिन पिपलानी थाने में दोपहर में जाकर थाना प्रभारी से बात हो गई थी कि कल आकर बयान दे देंगे इसमें सहमति भी हुई थी थाना प्रभारी से। परंतु दबाव बनाकर थाने में शाम 5 बजे अध्यक्ष को पांच नंबर गेट से ही ले लिया गया था थाने में, जैसे कि बहुत बड़ा अपराध किया गया हो। ऐसा तो वारंट नोटिस में किया जाता है। पर ये मुझे आजतक समझ नहीं आया सत्ता पाने के लिए कोई क्या क्या जरिया अपनाते हैं। यहां सफ़ल नहीं हुए तो सदस्यों को भी परेशानी में डालने के लिए पीछे नहीं हटे। कुछ भी आगे पीछे नहीं सोचा एवं एचईटी एसबीआई बैंक में संस्था अकाउंट फ्रिज करा दिया और बोलते फिर रहे हैं कि अध्यक्ष ने ऐसा किया वैसा किया।

मेरा विनम्र आग्रह है संस्था संचालक बोर्ड की बैठक में आएं समाधान निकालें क्यूंकि बिना चर्चा से कोई भी प्रॉब्लेम समाधान नहीं होती। कैसे अकाउंट फ्रिज हटे और सदस्यों को कोई परेशानी झेलनी न पड़े, इसके लिए अपना इगो छोड़कर सदस्य हित के लिए सोचें। अभितक दो संचालक बोर्ड बैठक हो चुकी है दोनों बैठक में अनुपस्थित रहे हैं, मुझे ऐसा लगता है बैठक को बहिष्कार करना यानि सदस्यों को बहिष्कार करना है। क्योंकि इस बैठक में सदस्यों को मिलने वाले लाभांश और और संस्था का अकाउंट का फ्रिज हटाने और संस्था को सुचारू रूप से कैसे चलाएं इसके लिए बैठक रखी गई थी। उदाहरण स्वरूप एक झाड़ू में कई शिक होते हैं और वे एक बंधन से मजबूती जब बंधे हुए रहते हैं तो पूरे कचड़े को हटाने क्षमता रखते हैं पर जब अलग हो जाते हैं तो खुद ही कचड़ा बन जाते हैं जिससे फेंक दिया जाता है। ठीक इसी तरह ग्यारह संचालक सदस्यों एवं संस्था के हित में जब बंधे हुए रहेंगे तो संस्था की अकाउंट में लगे होल्ड/फ्रिज भी हटा दे पाएंगे पर अलग होंगे अपनी इगो के कारण तो कोई देर नहीं लगेगा सदस्यों द्वारा संचालकों को हटाने का।

सवाल- परचेस पॉलिसी, सर्विस पॉलिसी के विषय में आपकी क्या राय है

जवाब- दिनांक 17/11/2022 को पहली संचालक बोर्ड की बैठक हुई थी इस बैठक में मेरे द्वारा सर्वप्रथम परचेस पॉलिसी की बात रखी गई थी और सिग्नेचर ऑथोरिटी के लिए भी हमारे पांच संचालक में से रखिए ताकि पारदर्शिता बनी रहेगी, यह प्रस्ताव रखा गया था। दिनांक 11/02/2023 हुई संचालक बैठक में सर्विस पॉलिसी के लिए भी मेरे द्वारा प्रस्ताव रखा गया था, क्योंकि एक ही अस्थायी कर्मचारी को स्थायी किया गया था, जिसके लिए ऑब्जेक्शन किया। कौनसे आधार पर ये निष्पति लिया गया है क्या पॉलिसी दिखाएं पर इनका कोई जवाब नहीं था और मनमानी बहुमत के आधार पर निर्णय लिया। मेरे द्वारा उस समय ये ऑब्जेक्शन उठाया गया था किस आधार पर एक सेवानिवृत्त कर्मचारी को 7 से 8 साल तक सेवा अवधि बढ़ाकर रखना,, इस कारण बाकी कर्मचारियों के प्रमोशन समय पर नहीं हो पा रहा था।,इनका हक छीना जा रहा था। उस समय ये कहां थे क्यों ऑब्जेक्शन नहीं ली। दो संचालक द्वारा दिल्ली से खरीदारी की गई थी, जिसका आदेश बोर्ड से पारित नहीं हुआ था। इस तरह की परिस्थिति को देखते हुए परचेस पॉलिसी के साथ परचेस कमिटी बनाने का ज़ोर दिया और प्रस्ताव रखा पर उस समय ये जरा सा भी नहीं सोचा।

बहुमत जब इनका था, विपक्ष संचालकों की कोई भी प्रस्ताव सुनने को तयार नहीं थे, केवल एक प्रस्ताव छोड़ के। साथी संचालक दीपक गुप्ता और मेरे द्वारा प्रस्ताव रखा गया था। वर्तमान में जो सभा भत्ता दिया जाता है, वो आज के समय में कम है इसको बढ़ाया जा सकता है, इसमें उपस्थित सभी संचालक सर्वसहमति से 1500/- सभा भत्ता हेतु अनुमोदन किया। ये उस समय सभा भत्ता 1500/- के लिए ऑब्जेक्शन कर सकते थे, परंतु नहीं किया और सभा भत्ता लेते रहे और आम सभा में इस विषय में हंगामा खड़ा कर के सदस्यों को गुमराह भी कर दिया। ये जो आम सभा में सदस्यों 100 रुपए मिलते हैं ये वाहन भत्ता (conveyance allowance) है और ये संचालको को भी यही राशि दिया जाता है। इनमें कोई भी अंतर नहीं है। परंतु संचालकों को सभा भत्ता (meeting allowance) अलग से संचालक बोर्ड बैठक में दिया जाता है, जिसका राशि 1500/- किया गया था।

जैसा कि मैने कहा बहुमत जब इनका था, विपक्ष संचालकों की कोई भी प्रस्ताव सुनते नहीं थे। इसमें लॉन दर कमाने, लाभांश प्रतिशत बढ़ाने, गिफ्ट अछा अछा देने, सदस्यों हित हेतु कई सारे प्रस्ताव देते थे पर उसकी कोई सुनवाई नहीं होती थी। इसलिए हमने पांच संचालक विज्ञापन के जरिए अध्यक्ष को दिया और इसका फ़ोटो साथी संचालक राजकुमार द्वारा खींचा तो ये बवाल मचा दिया कि यहां तक मारने पीटने की धमकी दे दिया। मैने तो कहा मारने पीटने आए हो तो मारो पीटो पर सदस्यों हित हेतु निर्णय लो। ये शुरू से ही दादा गिरी से सत्ता चलाने हेतु प्रयास रहा परंतु ऊपरवाला ने ठीक समय पर ही रोक दिया।

सवाल- सत्यमेव जयते पैनल की क्या अस्तित्व है

जवाब- देखिए कोई भी पैनल या समूह किसी एक व्यक्ति से नहीं बनता है। थ्रिफ्ट सोसाइटी में चुनाव लड़ने हेतु 11 लोगों की जरूरत पड़ती है। पैनल बनाने के लिए एक नहीं साथ में कई समर्थक साथियों का भी इन्वॉल्व करनी पड़ता है एवं कई संगठनों का भी सहयोग लेना होता है तब जाकर चुनाव जीतने की उम्मीद रखा जाता है। इस पैनल का नाम मेरे द्वारा रखा गया था। पैनल में जितने साथी जोड़े थे सबका बहुत योगदान था, कुछ तो ऐसे साथी थे जो चुनाव खुद लड़ना सोचे नहीं थे, पर पैनल के लिए अथक परिश्रम करते थे। जब हमारे पैनल से कुछ साथी कट गए चुनाव लड़ने के लिए तो उनके बदले उन साथियों को चुनाव में उतारा गया और कम समय प्रचार प्रसार में भी बहुत अछा वोट लाए थे। चुनाव में सत्यमेव जयते पैनल से 9 प्रत्याशी चुनाव लड़े थे। जिनका नाम इस प्रकार है के.एन. मालवीया, कृष्णा डोंगरे, दीपक गुप्ता, विजेंद्र पाटिल, विनय सिंह, सादिक खान, सुरेश जगत, राजकुमार इड़पाची और में निशान्त कुमार नन्दा।

सवाल- आप थ्रिफ्ट सोसाइटी के सभी संचालक एवं सदस्यों के लिए क्या संदेश देना चाहते हैं

जवाब- सबसे पहले धनतरेस एवं दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं एवं अभिनंदन देता हूं सभी सम्माननीय सदस्यों को।

दुनिया का एक निराट सत्य है "दिन अगर हो तो अंधेरा निश्चित है एवं अंधेरा हो तो दिन भी सुनिश्चित है"। इसीलिए हर एक बात बड़े सोच समझकर करनी चाहिए और थोड़ा जीवन के हर पल में स्पेस बनाकर रखनी चाहिए ताकि वही स्पेस कभी भी जरूरत समय पर काम आ जाती है।

(दैनिक कारखाने का सफर अखबार में 13वीं श्रृंखला शुक्रवार को इसमें पढ़िए ट्रेन पटरी पर)

पीएम मोदी रोजगार मेले में सौंपेंगे 51000 से ज्यादा नियुक्ति पत्र, देशभर में विभिन्न स्थानों पर आयोजित होंगे कार्यक्रम

दैनिक कारखाने क सफर । एजेंसी नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शुक्रवार को 17वें रोजगार मेले के दौरान 51,000 से ज्यादा उम्मीदवारों को सरकारी नौकरियों के लिए नियुक्ति पत्र सौंपेंगे। वह वीडियो कांफ्रेंस के जरिये लोगों को संबोधित करेंगे और देशभर में विभिन्न स्थानों पर आयोजित समारोहों में डाक विभाग और अन्य सरकारी विभागों के लिए नियुक्ति पत्र सौंपेंगे। इस समारोह में केंद्रीय कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्री जितेंद्र सिंह और केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग राज्य मंत्री अजय टम्टा भी मौजूद रहेंगे। देशभर में रोजगार मेलों के जरिये अब तक 10 लाख से ज्यादा भर्ती पत्र जारी किए जा चुके हैं।

व्हाइट हाउस के सुरक्षा गेट से टकराई कार, चालक गिरफ्तार

दैनिक कारखाने क सफर । एजेंसी वॉशिंगटन

अमेरिका की राजधानी वॉशिंगटन डीसी में मंगलवार की रात एक अजीबोगरीब घटना देखने को मिली जब एक व्यक्ति अपनी कार लेकर व्हाइट हाउस के सुरक्षा गेट से टकरा गया। बता दें कि यह घटना

रात लगभग 10:37 बजे हुई, और मौके पर मौजूद यूएस सीक्रेट सर्विस के अधिकारियों ने उसे तुरंत गिरफ्तार कर लिया हैं। मौजूद जानकारी के अनुसार, आरोपी व्यक्ति को गिरफ्तार करने के बाद उसकी कार की जांच की गई और इसे सुरक्षित पाया गया। हालांकि, अभी तक अधिकारियों ने इस घटना के पीछे का कारण, चालक की पहचान या किसी भी संभावित मंशा के बारे में कोई जानकारी साझा नहीं की हैं। गौरतलब है कि व्हाइट हाउस के पास से इस घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है, जिसमें कार और सुरक्षा गेट के बीच हुए टकराव के दृश्य दिखाई दे रहे हैं। सुरक्षा अधिकारियों ने मौके पर तुरंत नियंत्रण स्थापित कर सुरक्षा व्यवस्था को बहाल किया और आसपास के क्षेत्र को सुरक्षित किया हैं। यह घटना ऐसे समय में हुई है जब व्हाइट हाउस की सुरक्षा को लेकर हमेशा कड़ी सतर्कता बरती जाती हैं, और किसी भी तरह की सुरक्षा उल्लंघन पर तुरंत कार्रवाई की जाती हैं।

जेन पासकी और उपराष्ट्रपति जेडी वांस के बीच नया विवाद, पॉडकास्ट में हुई शादी पर मजाक

दैनिक कारखाने क सफर । एजेंसी वॉशिंगटन

व्हाइट हाउस पूर्व प्रेस सचिव जेन पासकी और उपराष्ट्रपति जेडी वांस के बीच एक बार फिर बहस छिड़ गई है। बता दें कि यह विवाद पिछले महीने मिनियापोलिस के स्कूल शूटिंग के बाद शुरू हुए पब्लिक विवाद की याद दिलाता है, जब पासकी ने इस घटना पर प्रार्थना की भूमिका पर सवाल उठाए थे। मौजूदा विवाद तब शुरू हुआ जब MSNBC की होस्ट जेन पासकी ने "I've Had It" पॉडकास्ट में वांस के विवाह को लेकर एक मजाक किया। पासकी ने कहा कि उन्हें हमेशा यह सोचने में आश्चर्य होता है कि वांस की पत्नी का क्या मनोविज्ञान है। उन्होंने हंसी-मजाक में कहा, "क्या आप ठीक हैं? कृपया चार बार पलक झपकाएं। हम यहाँ आएंगे और आपको बचाएंगे।" पासकी ने वांस की सोच और उनकी चालाकी की भी बात की, यह कहते हुए कि वह किसी भी तरह से अपनी जनता को प्रभावित करने के लिए खुद को बदल सकते हैं। उन्होंने कहा, "आपने जो पूरा वर्णन किया, उसमें वह कुछ मामलों में डरावना भी है। वह युवा, महत्वाकांक्षी और ऐसा बदलाव करने वाला व्यक्ति है, जो जो कुछ भी जनता को दिखाना चाहता है, वह बन जाता है।" हालांकि, पासकी की इस टिप्पणी को कई सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं ने नकारात्मक रूप से लिया। कुछ ने इसे "भद्दा" और "विलेन" कहा, जबकि कुछ ने फेमिनिज़्म के संदर्भ में भी सवाल उठाए कि ऐसा क्यों माना जा रहा है जब महिला सही मत नहीं देती। FOX न्यूज़ के जो कॉन्चा ने भी इसे "अच्छा व्यवहार नहीं" बताया। मौजूदा विवाद पर गौर करें तो यह जेन पासकी और जेडी वांस के लंबे समय से चल रहे टकराव का हिस्सा है। गौरतलब है कि अगस्त 2025 में मिनियापोलिस की शूटिंग के बाद पासकी ने कहा था, "प्रार्थना पर्याप्त नहीं है। यह स्कूल शूटिंग को रोकती नहीं है और बच्चों को वापस नहीं लाती।"

दैनिक कारखाने का सफर अखबार का संपादकीय कार्यालय

गोबिंद टॉवर, क्वालिटी रेस्टोरेंट के पास, एसबी स्टूडियों के ऊपर पिपलानी पेट्रोल पंप के पास, सोनागिरी चौराहा रायसेन रोड भेल भोपाल। मोबाइल नंबरः 9826035849, 9425006706

कपिलेश्वर गोशाला मे हुआ सामुहिक गोवर्धन पूजन का आयोजन

गौ माता हमारी संस्कृति, श्रद्धा और समृद्धि की आधारशिला हैं : राज्य मंत्री टेटवाल

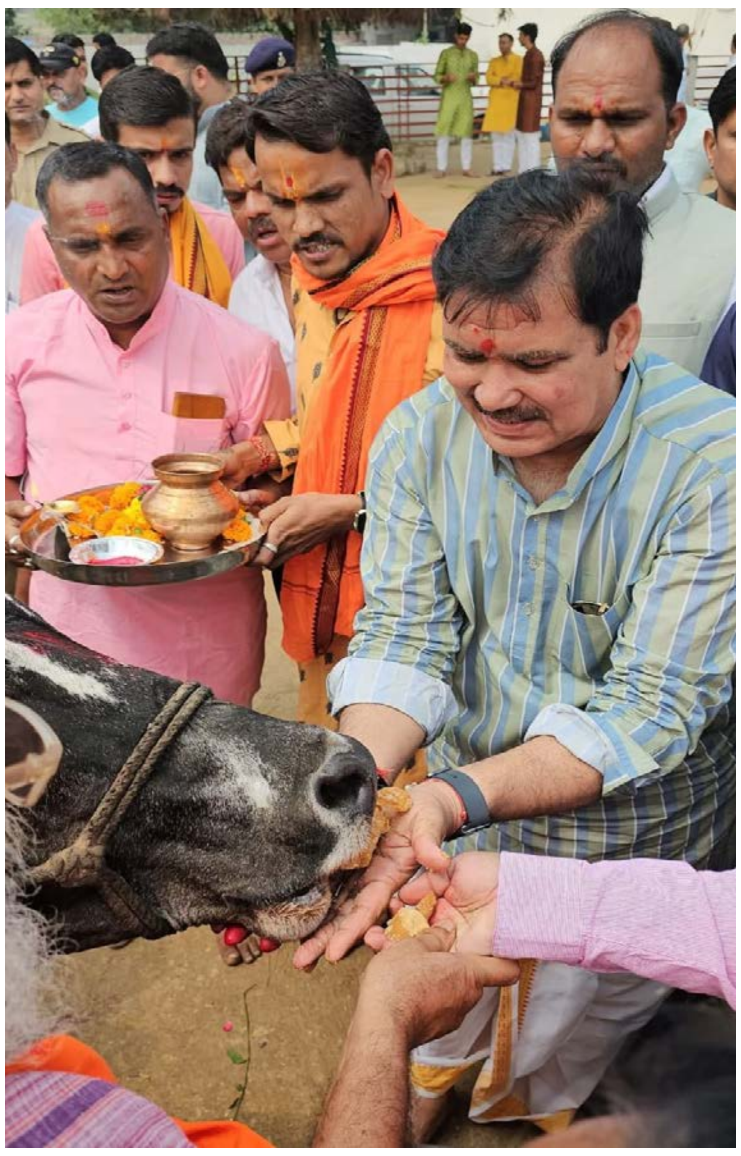

दैनिक कारखाने का सफर। सारंगपुर

कपिलेश्वर गोशाला समिति के तत्वावधान मे बुधवार को गोशाला परिसर मे सामुहिक गो पूजन गोवर्धन पूजन कार्यक्रम संत पवन दास महाराज के सानिध्य में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि मध्यप्रदेश सरकार के राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार डां गौतम टेटवाल, जन अभियान परिषद प्रदेश उपाध्यक्ष मोहन नागर, जिलाधीश डॉ गिरीश कुमार मिश्रा, संत पवनदास महाराज पशुपालन विभाग उप संचालक श्रीवास्तव, हिंदू उत्सव समिति अध्यक्ष डॉ॰ ध्रुव भल्ला एवं समिति अध्यक्ष पी एस मंडलोंइ सहित अन्य अतिथियों द्वारा गोशाला मे निवास रत सभी गौ माता का विधी विधान से सामुहिक पूजन अर्चन किया , साथ ही कलाकार जितेन्द्र सोलंकी सुशील व्यास बदद्रीलाल बामनिया द्वारा गाय के गोबर से निर्मित गोवर्धन भगवान की पूजन की गई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि डॉक्टर गौतम टेटवाल ने गौ माता हेतु सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं से अवगत कराते हुए, समिति द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि गौ माता हमारी संस्कृति, श्रद्धा और समृद्धि की आधारशिला हैं ! उनकी सेवा से न

केवल हमारे जीवन में पुण्य की प्राप्ति होती है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण, जल संवर्धन और ग्रामीण अर्थव्यवस्था की सशक्त नींव भी मजबूत होती है।जिलाधीश डॉ गिरीश कुमार मिश्रा ने सारंगपुर गौशाला में हो रहे विकास कार्यों को अनुकरणी बताते हुए समिति द्वारा निरंतर इसी प्रकार से गौ माता की सेवा करने की आशा जताई। कार्यक्रम में गो सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले समिति सचिव ओम राठी को प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का संचालन आदित्य शर्मा द्वारा किया गया एवं आभार रमेशचंद्र जोशी ने माना। इस दोरान विधायक प्रतिनिधि पृथ्वीराज टेटवाल,जुगलकिशोर दुबे मंडल अध्यक्ष महेश पुष्पद नपा उपाध्यक्ष प्रतिनिधि निलेश वर्मा महेश पाटीदार नंदकिशोर सोनी लक्ष्मीनारायण त्रिकार राजेन्द्र शर्मा विष्णु पाटीदार मनीष रानोलिया वैभव पुष्पद सहित नगर के पर्यावरण प्रेमी दल हिन्दू उत्सव समिति महादेव मित्र मंडल एवं अन्य समाजसेवी संगठनों के पदाधिकारी एवं वरिष्ठ नागरिकों ने बड़ी संख्या में सहभागिता की।

1.27 करोड़ खातों में 318 करोड़ ट्रांसफर करेंगे सीएम डॉ. यादव

फाइल फोटो

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

रक्षाबंधन पर 250 रुपए की राशि लाड़ली बहनों के खाते में जमा करने के बाद मोहन सरकार अब कल भाईदूज पर एक बार फिर 1.27 करोड़ बहनों के खाते में 250 रुपए ट्रांसफर करेगी। इस तरह 318 करोड़ रुपए लाड़ली बहनों के खाते में जमा होंगे। मुख्यमंत्री की घोषणा के बाद अब नवंबर से हर लाड़ली बहना के खाते में 1500 रुपए जमा होंगे। भाईदूज पर लाड़ली बहनों के खाते में राशि भेजने के पहले मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने कहा है कि भगवान श्रीकृष्ण की बहन सुभद्रा की तरह लाड़ली बहनों को यह राशि योजना के तहत दी जा रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सभी लाड़ली बहनों को भाईदूज की बधाई भी दी। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में बहनों, युवाओं, किसानों और गरीबों के कल्याण के लिए राज्य सरकार निरंतर प्रयास कर रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि बहनों को भाईदूज के अवसर पर लाड़ली बहना योजना में 250 रुपए की राशि देने का वादा पूरा किया जा रहा है। अब बहनों के योजना के अंतर्गत 1500 रुपए प्राप्त होंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि दीपावली, गोवर्धन पूजा और भाईदूज के त्योहार सौगात देने का अवसर बने हैं। इस क्रम में किसानों को प्राकृतिक आपदा से प्रभावित फसलों के लिए 1800 करोड़ की राहत राशि जिलों में दी गई। हर क्षेत्र में अतिवृष्टि, ओलावृष्टि, पीला मोजेक जैसी समस्याओं का सर्वे करवाकर किसानों को मदद पहुंचाई गई। इसके लिए जिलों में आवश्यक प्रबंधन किया गया। सरकार अन्नदाता के जीवन में आए कष्ट में उसके साथ खड़ी है।

पत्नी को पीटा और दहेज मांगा, अब देगा 3 लाख का मुआवजा, हर माह 4 हजार रुपए भी : कोर्ट

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

जिला अदालत ने घरेलू हिंसा के मामले में पत्नी के पक्ष में फैसला सुनाते हुए पति को हर महीने 10 तारीख तक 4 हजार रुपए भरण-पोषण देने और मानसिक प्रताड़ना के लिए 3 लाख रुपए का मुआवजा एकमुश्त अदा करने का आदेश दिया है। यह फैसला न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी शोभना गौतम की अदालत ने सुनाया। कोर्ट ने कहा कि पति द्वारा की गई मारपीट, दहेज की मांग और इलाज में लापरवाही जैसे कृत्य घरेलू हिंसा हैं। गांधीनगर निवासी उषा सिलावट की शादी 17 अप्रैल 2016 को शुजालपुर निवासी राजेश सिलावट से हुई थी। शादी के कुछ समय बाद से ही पति और ससुरालवालों ने उसे दहेज के लिए प्रताड़ित करना शुरू कर दिया था।

उषा ने बताया कि जब उसने पैसे देने से इनकार किया, तो राजेश ने उसे जमीन पर पटक कर डंडे से पीटा और फिर रिपोर्ट दर्ज कराने से रोकने के लिए कमरे में बंद कर दिया। 1 सितंबर 2020 को उसने किसी तरह फोन कर अपने भाई को सूचना दी, जिसके बाद उसका भाई उसे लेकर मायके आ गया। बेटे की मौत में भी लापरवाही - 28 जनवरी 2020 को उषा के बेटे का जन्म हुआ था, लेकिन वह बीमार रहता था। इलाज के दौरान कमला नेहरू अस्पताल के डॉक्टरों ने उसे दिल्ली एम्स रेफर किया था। बावजूद इसके, राजेश और ससुरालवालों ने उसे इलाज के लिए नहीं ले जाया, जिससे 23 दिसंबर 2020 को बच्चे की मौत हो गई। इस दौरान भी राजेश ने अस्पताल में उषा के साथ मारपीट की थी। उषा ने महिला थाने में पति और ससुराल वालों के खिलाफ दहेज प्रताड़ना और मारपीट की शिकायत की थी, जिसके बाद थाने द्वारा काउंसलिंग कराई गई थी। समझौते के तहत दोनों को बेटे को इलाज के लिए दिल्ली एम्स जाना था, लेकिन राजेश ने समझौते का पालन नहीं किया। बाद में राजेश ने शुजालपुर कोर्ट में तलाक का केस भी दाखिल कर दिया।

कपिलेश्वर कार्तिक मेला आयोजन को लेकर विधायक प्रतिनिधि एवं प्रशासनिक अधिकारियों ने मेला क्षेत्र का किया निरीक्षण

दैनिक कारखाने का सफर। सारंगपुर

बुधवार को विधायक प्रतिनिधि पृथ्वीटराज टेटवाल के द्वारा प्रतिवर्ष अनुसार इस वर्ष भी दिनांक 01 नवंबर 2025 से प्रांरभ होने वाले कपिलेश्वर मेला (जतरा) स्थल पर आवश्यक व्यवस्थाओं के संबंध में प्रशासनिक अमले अनुविभागीय अधिकारी राजस्व रोहित बम्होरे अनुविभागीय अधिकारी पुलिस मुख्य नगर पालिका अधिकारी सुश्री ज्योति सुनहरे व अन्य कर्मचारियों के साथ बैठक रखी गई एवं कपिलेश्वंर मेला क्षेत्र का निरीक्षण किया। जिसमें मेला ग्राउण्ड पर लाईट व्य वस्था , सुरक्षा व्यवस्था हेतु बेरीकेट, महिलाओं के लिए चैजिंग कक्ष तथा मेला सौन्दार्यकरण हेतु धार्मिक बडे पोस्टर

लगाये जाने संबंधी आवश्यक निर्देश दिये गये साथ ही मेला पूर्व घाटों की साफ सफाई एवं पेयजल की समुचित व्यरवस्था के भी निर्देश दिये।

गोमाता सनातन की प्राण, गोवर्धन पूजा जियो और जीने दो का विचार साझा करने का प्रतीक

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव मंगलवार को रवींद्र भवन में गोवर्धन पूजा के राज्य स्तरीय कार्यक्रम में शामिल हुए। सीएम ने कहा कि गोमाता सनातन संस्कृति की प्राण हैं। हमारी परंपराएं और उत्सव में प्रकृति के प्रति आदर और समाज के प्रति उत्तरदायित्व समाहित है। गोवर्धन पूजा इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। गोवर्धन और गोवंश की पूजा हमें प्रकृति, पर्यावरण व पशुधन संवर्धन का संदेश देती हैं। यह प्रकृति और पर्यावरण संरक्षण का उत्सव है। गोवर्धन पूजा जियो और जीने दो के विचार को समाज में मिल-बांटकर साझा करने का प्रतीक है।

विधायक ने पर्वत बनाकर की गोवर्धन पूजा, महापौर ने गायों को खिलाया चारा

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

पांच दिन के दीपोत्सव में आज गोवर्धन पूजा का पर्व मनाया जा रहा है। भोपाल में भी लोगों में खासा उत्साह है। सुबह से ही पूजा-अर्चना का दौर शुरू हो गया, जो शाम तक चलेगा। आमजनों के साथ जनप्रतिनिधि भी पूजन कर रहे हैं। हुजूर विधायक रामेश्वर शर्मा ने अपने कार्यालय युवा सदन पर विधिपूर्वक गोवर्धन महाराज का पूजन-अर्चन कर आशीर्वाद लिया। उन्होंने गौ-पूजन कर गायों को ग्रास भी अर्पित किया और प्रदेश व देश की सुख-समृद्धि की कामना की। पूजन में कार्यकर्ताओं के साथ आमजनों की भी उपस्थिति रही। विधायक ने गोबर और फूलों से गोवर्धन पर्वत की आकृति भी बनाई। इस आयोजन में बड़ी संख्या में आम लोग भी शामिल हुए। करीब एक घंटा पूजा-अर्चना के बाद गायों को चारा और फल खिलाए।

नगर निगम के कांजी हाउस शाहजहांनाबाद में महापौर मालती राय ने गोवर्धन पर्वत और गायों की पूजा-अर्चना की। इस दौरान गौ सेवकों का सम्मान भी किया गया। एमआईसी मेंबर आरके सिंह बघेल, मनोज राठौर आदि मौजूद थे। ग्राम खितवास में सैकड़ों साल पुरानी परंपरा निभाई गई। जिला पंचायत सदस्य विनय मेहर ने बताया

कि गांव में छौड़ा परंपरा का अपना इतिहास रहा है। बुधवार खेला गया। सुबह सभी ग्रामीण गायों को लेकर एक जगह पर इकट्ठा हुए। इसके बाद छौड़े से सभी गायों को उनके ऊपर से झाड़नी दिया। ताकि, वर्षभर गायों को कोई बीमारी न हो। अन्य गोवंश को भी झाड़नी दिया गया। भोपाल में गोवर्धन पूजा एवं भगवान गिर्राज पर्वत की परिक्रमा का आयोजन किया जा रहा है। ग्यारह सौ क्वार्टर स्थित कैंपियन स्कूल के सामने मथुरा, वृंदावन एवं गोवर्धन पर्वत पथ बनाया गया है। साथ ही अन्नकूट महोत्सव मनाया जा रहा है। इस आयोजन में मथुरा के गायक एवं संगीत की ध्वनियों के साथ आयोजन कर रहे हैं। आयोजन समिति के अध्यक्ष एडवोकेट प्रमोद सक्सेना, संयोजक डॉ. अनिल पचौरी सहित कॉलोनी के लोग मौजूद हैं।

गायत्री शक्ति पीठ, भोपाल में धूमधाम से मनी गोवर्धन पूजा, प्रकृति और गौ-वंश संरक्षण का दिया संदेश

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

22 अक्टूबर 2025: अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा संचालित गायत्री शक्ति पीठ, भोपाल में आज गोवर्धन पूजा का पर्व पारंपरिक श्रद्धा और धूमधाम से मनाया गया । यह कार्यक्रम प्रकृति के संरक्षण और गौ-वंश की उन्नति का संदेश देते हुए संपन्न हुआ, जो भारतीय कृषि संस्कृति का एक अभिन्न अंग है । कार्यक्रम का आयोजन पंचगव्य केंद्र एवं गौशाला प्रभारी श्री सुभाष शर्मा जी के कुशल मार्गदर्शन में किया गया। इस अवसर पर, शक्ति पीठ परिसर में स्थित गौशाला में गाय के गोबर से गोवर्धन पर्वत की एक विशाल प्रतिकृति बनाई गई और उसका विधि-विधान से पूजन किया गया । उपस्थित श्रद्धालुओं ने सामूहिक रूप से परिक्रमा कर भगवान कृष्ण के उस स्वरूप का स्मरण किया, जिसने इंद्र के अहंकार को तोड़कर प्रकृति की रक्षा की थी ।

इस मौके पर गौ-माताओं का विशेष पूजन और आरती की गई तथा उन्हें अन्नकूट का भोग अर्पित किया गया। श्री आरपी हजारी ऊपजोन ने बताया कि गोवर्धन पूजा हमें सिखाती है कि हमारा जीवन प्रकृति और गौ-धन पर आश्रित है, इसलिए इनका सम्मान और संरक्षण हमारा परम कर्तव्य है, साथ ही उन्होंने कहा गौउत्पातो की मांग का समाज में जागरण कर गौ पालन में सहायक होगा। इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में गायत्री परिवार के सदस्यों और स्थानीय श्रद्धालुओं ने भाग लिया। इस अवसर पर रामेश्वर मीणा , कैलाश ,शिवशंकर,नारायण,विमल, रामधन,अशोक,मोहन दादा आदि गौ सेवकों का सम्मान किया गया। इस अफसर पर महाकालेश्वर श्रीवास्तव कल पटेल ओपी तिवारी अशोक सक्सेना विनोद गुप्ता विजय गुप्ता एवं कई वरिष्ठ परिजन उपस्थित रहे

टीम हेमंत में दलित-आदिवासी होंगे पावरफुल, सिंधिया खेमे से प्रभुराम, सीएम के करीबी प्रभुलाल महामंत्री की रेस में

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल की टीम का ऐलान कभी भी हो सकता है। टीम हेमंत में दलित और आदिवासी वर्ग पावरफुल भूमिका में होगा। प्रदेश महामंत्री के लिए सिंधिया खेमे से पूर्व मंत्री प्रभुराम चौधरी का नाम है। वहीं CM के करीबी प्रभुलाल जाटवा का भी नाम प्रदेश महामंत्री के लिए प्रस्तावित है। अंतिम मुहर दिल्ली में नाम फाइनल होने के बाद लगेगी और इसी हफ्ते में लिस्ट जारी होने की पूरी संभावना है। टीम हेमंत में मौजूदा प्रदेश मंत्री राहुल कोठारी का प्रमोशन होना तय है। राहुल कोठारी प्रदेश के प्रवक्ता भी रह चुके हैं और CM के करीबी हैं। बीजेपी की प्रदेश कार्यकारिणी में विधायक कुंवर सिंह टेकाम और राज्यसभा सांसद सुमेर सिंह सोलंकी में से किसी एक को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। रामलाल रौतेल को भी टीम में एडजस्ट किया जा सकता है। वीडी शर्मा के साथ टीम में शामिल हुईं राज्यसभा सांसद कविता पाटीदार प्रदेश महामंत्री हैं। कविता की जगह विधायक ललिता यादव या सांसद लता वानखेड़े को मौका मिल सकता है। बीजेपी की प्रदेश कार्यकारिणी में सबसे ज्यादा रेस कार्यालय प्रभारी के लिए चल रही है। विजय दुबे, आशुतोष तिवारी और श्याम महाजन, सत्येंद्र भूषण सिंह के नाम कार्यालय प्रभारी के लिए चर्चा में हैं। मध्य प्रदेश भाजपा की नई कार्यकारिणी को लेकर चल रहा मंथन पूरा हो गया है। प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के साथ प्रदेश पदाधिकारियों के नामों पर चर्चा करने के बाद लिस्ट तैयार कर ली है। इसे मंजूरी के लिए केंद्रीय नेतृत्व को भेजा जा रहा है।

मंत्री विश्वास कैलाश सारंग ने भोपाल में छठ पूजा की तैयारियों का किया निरीक्षण

छठ पूजा समानता और सद्भाव का पर्व- मंत्री सारंग

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

सहकारिता, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री विश्वास कैलाश सारंग ने लोक आस्था के महापर्व छठ पूजा की तैयारियों को लेकर बुधवार को भोपाल के विभिन्न स्थानों पर बने छठ पूजन सूर्य कुंडों का निरीक्षण किया। मंत्री श्री सारंग ने नरेला विधानसभा के अन्ना नगर शाखा ग्राउंड, सुभाष नगर दुर्गा मंदिर, एकतापुरी पार्क, राजेंद्र नगर, करोंद व संजीव नगर पर छठ पूजन स्थलों का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान मंत्री श्री सारंग ने अधिकारियों को जल कुंडों की साफ-सफाई, स्वच्छता, शुद्ध जल, पर्याप्त रोशनी और छठ व्रतियों की सुविधा एवं सुरक्षा सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि छठ पूजा के दौरान माताओं और बहनों के लिए सभी सुविधाएँ सहज रूप से उपलब्ध हों और व्यवस्थाएं पूरी तरह सुव्यवस्थित रहें। निरीक्षण के दौरान जिला प्रशासन, नगर निगम, पुलिस विभाग के वरिष्ठ अधिकारी, स्थानीय जनप्रतिनिधि और क्षेत्रवासी उपस्थित रहे। मंत्री सारंग ने बताया कि भोपाल में छठ पूजा बड़े ही हर्ष और उल्लास के साथ मनाई जाती है। नरेला विधानसभा में छठ पूजा के लिए सूर्य कुंडों का निर्माण और घाटों का विस्तार किया गया है। उन्होंने कहा कि व्रतियों की सुविधा और सुरक्षा का ध्यान रखते हुए सभी व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जा रही हैं। पूरी तैयारी के बाद पूजा स्थलों पर भव्यता के साथ छठ पूजा की जायेगी। मंत्री सारंग ने बताया कि छठ पूजा के अवसर पर बड़ी संख्या में क्षेत्र की महिलायें पूजन में सम्मिलित होती हैं। ऐसे में महिलाओं की सुविधा के लिये छठ घाटों के समीप अस्थाई चैंजिंग रूम लगाये जायेंगे साथ ही नगर निगम द्वारा चलित शौचालय की व्यवस्था भी की जाएगी। उन्होंने कहा कि छठ पूजा के लिये क्षेत्र के सूर्य कुंडों की मरम्मत एवं सफाई का कार्य तेजी से किया जा रहा है। वहीं व्रतियों को किसी भी प्रकार की असुविधा ना हो इसका विशेष ध्यान दिया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि नरेला विधानसभा क्षेत्र में हर वर्ष छठ मैया और भगवान सूर्य देव की उपासना का महापर्व बड़े हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है। क्षेत्र में बड़ी संख्या में भोजपुरी समाज के नागरिक निवासरत हैं, जिससे इस पर्व का महत्व और बढ़ जाता है। नागरिकों की आस्था को ध्यान में रखते हुए, क्षेत्र में विभिन्न स्थानों पर छठ पूजन के लिए सूर्य कुंडों का निर्माण करवाया गया है। महिलाएं इन कुंडों पर पहुँचकर पूरी आस्था और निष्ठा भाव से भगवान सूर्य को अर्घ्य देकर अपना व्रत पूर्ण करती हैं।

सहकारिता, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने बुधवार को गोवर्धन पूजा के अवसर पर नरेला विधानसभा अतंर्गत अन्ना नगर स्थित गौशाला में भगवान श्री गोवर्धन का विधिवत पूजन तथा गौमाता को ग्रास अर्पित कर सर्वमंगल की कामना की। मंत्री सारंग ने कहा कि सनातन संस्कृति में गौमाता पूज्य हैं और वेदों में उन्हें विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त है।

उन्होंने बताया कि जिस प्रकार देवी लक्ष्मी सुख और समृद्धि प्रदान करती हैं, उसी प्रकार गौमाता अपने दूध से मानव जाति को स्वास्थ्य और जीवन रूपी धन प्रदान करती हैं। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि गो संवर्धन केवल एक धार्मिक कर्तव्य नहीं बल्कि सामाजिक आवश्यकता भी है, जिसके लिए सरकार लगातार प्रयास कर रही है।

उमा भारती बोलीं- 2029 का चुनाव झांसी से ही लड़ूंगी

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती ने चुनाव लड़ने की बात दोहराते हुए बुधवार को फिर कहा है कि मैं 2029 का चुनाव झांसी से ही लड़ूंगी। लड़ूंगी तो झांसी से ही लड़ूंगी। मेरी इच्छा लोकसभा चुनाव लड़ने की ही है। पार्टी कहेगी तो चुनाव लड़ूंगी, मना नहीं करूंगी। उमा भारती ने कहा कि मैं राजनीति में हाशिए पर नहीं हूं। गाय और गंगा, यह कार्य राजनीति के लिए दिल से कर कर रही हूं। इसके अलावा पॉलिटिक्स में मेरी कोई और रुचि नहीं है। उमा भारती ने कहा कि गोपाष्टमी पर 29 अक्टूबर को गो-संवर्धन अभियान का शुभारंभ करूंगी। यह अभियान डेढ़ साल तक चलेगा। इसके लिए ग्राम पंचायतों से सहयोग लिया जाएगा। इससे किसानों को जोड़ा जाएगा। उमा भारती ने कहा कि मैं चाहती हूं कि लाड़ली बहनों को 2 गाय दी जाएं, क्योंकि लाड़ली बहनें ही गायों को पालने का काम अच्छे से कर सकती हैं। गाय तब बचेगी जब किसान चाहेगा।

ओम शिव शक्ति सेवा मंडल के सदस्यों ने गोवर्धन जी का पूजन किया

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

ओम शिव शक्ति सेवा मंडल भोपाल के सचिव रिंकू भटेजा ने बताया कि मंडल सदस्यों द्वारा अवधपुरी में मंडल के सलाहकार श्रीलक्ष्मण सिंह जाट के निवास में जाकर गोवर्धन जी की पूजन किया। पूजन करने वालों में मंडल सचिव रिंकू भटेजा, योगेश श्रीवास्तव, कपिल ग्वाला सचिन आर्य प्रदीपसोनी मंडल सदस्य थे।

भोपाल में बुजुर्ग की हत्या,शव बोरे में बंद कर फेंका, मौत से पहले का सीसीटीवी सामने आया, बेटा बोला- लेनदारों पर मर्डर का शक

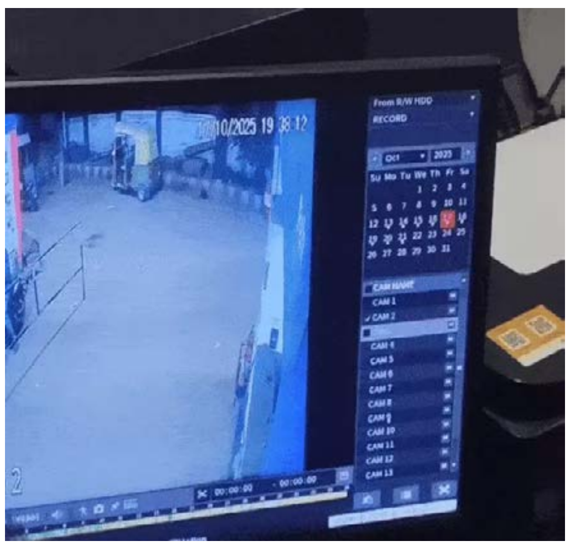

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भोपाल के पुष्पा नगर स्थित पातरा नाले में मंगलवार दोपहर मिले बुजुर्ग के शव की शिनाख्त हो गई है। मौत से पहले उसका आखिरी वीडियो भी दैनिक भास्कर को मिला है। काजी कैंप के एक युवक से बुजुर्ग ने दो हजार रुपए लिए थे। इसके बाद बुजुर्ग लापता हो गए थे। उनके बेटे का आरोप है कि कुछ लोगों से पिता को उधार दिए रुपए लेना था। इन्हीं पर हत्या का शक है। बुधवार दोपहर को परिजनों की मौजूदगी में बॉडी का पीएम गांधी मेडिकल कॉलेज की मर्चुरी में कराया गया। 18 अक्टूबर को मृतक की गुमशुदगी हनुमानगंज थाने में परिजनों ने दर्ज कराई थी। जबकि शव मिलने के बाद अशोका गार्डन थाना पुलिस ने मामले में मर्ग कायम किया है और हत्या का केस दर्ज किया जा रहा है। सईद रशीदी पिता सगीर रशीदी (64) सईद कॉलोनी थाना निशातपुरा क्षेत्र के रहने वाले थे और प्रॉपर्टी डीलिंग का काम करते थे। उनके बेटे नासिर

खान ने बताया कि 17 अक्टूबर को पिता अपनी बाइक से काजीकैंप गए थे। यहां उन्होंने शाम के समय आमिर कबाब नाम के युवक से मुलाकात की। उससे मुलाकात से पहले पिता सीसीटीवी कैमरे में कैद हुए हैं, लेकिन मुलाकात के बाद उसी रास्ते से लौटते नहीं दिखे हैं। रातभर नहीं लौटे तो अगले दिन 18 अक्टूबर को हमने थाने में शिकायत की। पुलिस ने गुमशुदगी दर्ज कर तलाश शुरू की। मंगलवार को एक बॉडी पुष्पा नगर नाले में मिली। शाम के समय हमें शिनाख्त करने के लिए मर्चुरी बुलाया गया। मैंने कपड़ों और चेहरा देखकर उनकी शिनाख्त कर ली। पिता के गले को धारदार हथियार से रेता गया है। उनके सीने पर चाकू घोंपा है। इसी के साथ बॉडी के अन्य हिस्सों पर भी चोटों के निशान हैं।

पिता की किसी से कोई रंजिश नहीं थी, उनकी गाड़ी काजी कैंप के शीबा पेट्रोल पंप पर खड़ी मिली है। सोनी और गुड्डू सहित अन्य कुछ लोगों से पिता का लेन-देन था। इनसे पिता को पैसा लेना था, संभव है कि रकम न देने के लिए इन्हीं लोगों ने पिता की हत्या की और शव को बोरे में बंद कर नाले में फैंक दिया। हालांकि पुलिस मामले की सभी एंगल पर जांच कर हरी है। मंगलवार को तेज बदबू आने के बाद पुष्पा नगर में रहने वाले आदिल खान ने नाले के करीब जाकर देखा। जहां उन्हें एक प्लास्टिक के बोरे में पैक लाश दिखी, जिसकी सूचना उन्होंने तत्काल स्थानीय अशोका गार्डन पुलिस को दी थी। अशोका गार्डन पुलिस का कहना है कि घटना स्थल के आसपास सीसीटीवी कैमरे नहीं है। लिहाजा शव को फेंकने वालों को नहीं देखा जा सका है। तकनीकी जांच और कमरों की मदद से आरोपियों की पहचान कर उन तक पहुंचने का प्रयास किया जा रहा है।

NDA की रणनीति में आया दिलचस्प मोड़

बिहार विधानसभा चुनावों से पहले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) ने अपने उम्मीदवार चयन में एक स्पष्ट रणनीतिक मोड़ लिया है। जहां पिछली बार भाजपा और जद (यू) दोनों दल यादव समुदाय को साधने की कोशिश में लगे थे, वहीं इस बार उन्होंने उस सामाजिक प्रयोग से पीछे हटकर अपने पारंपरिक समर्थन आधार को सुदृढ़ करने पर ध्यान केंद्रित किया है। भाजपा ने इस बार केवल 6 यादव उम्मीदवार उतारे हैं, जबकि 2020 में यह संख्या 16 थी। इसी तरह नीतीश कुमार की जद (यू) ने भी यादव प्रत्याशियों की संख्या 18 से घटाकर 8 कर दी है। इसकी बजाय भाजपा ने कई सीटों पर कुशवाहा, निशाद और वैश्य समुदायों को टिकट देकर संकेत दिया है कि पार्टी अब गैर-यादव पिछड़ों और परंपरागत उच्च जातियों पर भरोसा बढ़ा रही है। इसके अलावा, जद (यू) ने अपने मुस्लिम प्रत्याशियों की संख्या भी 11 से घटाकर केवल 4 कर दी है। यह इस बात का प्रमाण है कि अब वह यह मानकर चल रही है कि मुस्लिम मतदाता स्थायी रूप से राजद खेमे में जा चुके हैं। नीतीश की पार्टी ने 25 टिकट कुर्मी-कोयरी (कुशवाहा) जातियों को और 22-22 टिकट ऊँची जातियों व अत्यंत पिछड़े वर्गों को दिए हैं। हम आपको बता दें कि 2014 के बाद से भाजपा ने लगातार प्रयास किया कि वह बिहार में यादव और मुस्लिमों जैसे पारंपरिक रूप से राजद समर्थक वर्गों में सेंध लगाए। 2015 और 2020 के विधानसभा चुनावों में भाजपा ने कई यादव उम्मीदवार उतारकर यह संकेत दिया था कि वह "लालू के यादव वोट बैंक" को तोड़ने के लिए तैयार है। परंतु वास्तविकता यह है कि यादव समुदाय ने राजद से अपनी निष्ठा नहीं तोड़ी— बल्कि 2024 के लोकसभा चुनावों में उसने और मजबूती से INDIA गठबंधन के साथ खड़ा होना चुना। यही कारण है कि भाजपा और जद (यू) दोनों ने अब अपने प्रयोगों को सीमित कर दिया है। भाजपा ने स्पष्ट रूप से यह मान लिया है कि "यादव-मुस्लिम समीकरण" को तोड़ना अब निकट भविष्य में संभव नहीं। इसलिए पार्टी ने अपना ध्यान 'कोर वोट बैंक', यानी उच्च जातियों, गैर-यादव ओबीसी, ईबीसी और अनुसूचित जातियों के भीतर एक मजबूत एकजुटता बनाने पर केंद्रित कर दिया है। राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार, यह वही फार्मूला है जिसने भाजपा को 2019 के लोकसभा चुनावों में बिहार में बड़ी सफलता दिलाई थी। तब एनडीए ने गैर-यादव पिछड़ों और दलितों के बीच जातीय रेखाओं को पार करते हुए 'नरेंद्र मोदी बनाम लालूवाद' का नारा उभारा था। अब वही रणनीति बिहार विधानसभा चुनावों में दोहराई जा रही है— बस अधिक संगठित रूप में। दूसरी ओर, राजद ने भी अपने हिस्से का सबक सीख लिया है। पार्टी को यह एहसास हो गया है कि केवल यादव-मुस्लिम समीकरण, जिसकी नींव लालू प्रसाद यादव ने 1990 के दशक में रखी थी, अब सत्ता वापसी के लिए पर्याप्त नहीं है। इसलिए इस बार राजद ने अति पिछड़ों, दलितों और महिलाओं को भी अपने गठबंधन में जगह देने की कोशिश की है। तेजस्वी यादव का प्रयास है कि वह "सामाजिक न्याय" की पुरानी अवधारणा को "नव-समाजवाद" के नए संस्करण में ढालें, यानी आर्थिक असमानता और बेरोजगारी को जातीय सीमाओं से ऊपर उठाकर नया जनाधार बनाएं। परंतु एनडीए का 'सामाजिक संकेंद्रण मॉडल' इस कोशिश के लिए एक सीधी चुनौती है क्योंकि भाजपा और जद (यू) अब उन वर्गों में पैठ बना चुके हैं जो कभी लालू के 'पिछड़ा-आधारित गठबंधन' की आत्मा थे। उधर, नीतीश कुमार की जद (यू) इस बार अधिक असुरक्षित स्थिति में है। पार्टी ने जब 2022 में एक बार फिर भाजपा के साथ हाथ मिलाया, तब से उसके मुस्लिम वोटर लगभग पूरी तरह छिटक चुके हैं। अब नीतीश का भरोसा अपने जातीय आधार कुर्मी-कोयरी वोट बैंक और भाजपा समर्थक ऊँची जातियों पर है। लेकिन नीतीश के सामने दुविधा यह भी है कि भाजपा की बढ़ती संगठनात्मक ताकत उनके पारंपरिक इलाकों में भी सेंध लगा रही है। ऐसे में जद (यू) के लिए यह चुनाव "जीत की रणनीति" से अधिक "अस्तित्व की परीक्षा" बन गया है। भविष्य का परिदृश्य देखें तो बिहार के इस चुनावी मैदान में दो समानांतर रणनीतियाँ आमने-सामने हैं। पहली है एनडीए की रणनीति। इसके तहत कम दायरे में परंतु मजबूत और अनुशासित वोट बैंक को संगठित किया जा रहा है। दूसरी है राजद-INDIA गठबंधन की रणनीति। इसके तहत पारंपरिक आधार को बरकरार रखते हुए नए सामाजिक समूहों को जोड़ने का प्रयास चल रहा है। यदि एनडीए का 'कोर वोट बैंक मॉडल' सफल होता है, तो यह बिहार की राजनीति में "यादव-मुस्लिम एकाधिकार" के दौर का अंत हो सकता है। वहीं अगर राजद का 'विस्तारित गठबंधन' काम कर जाता है, तो यह संदेश जाएगा कि बिहार की राजनीति अब धर्म या जाति की संकीर्ण रेखाओं से बाहर निकलने लगी है। बिहार का जनादेश किस दिशा में जाएगा? यदि इस सवाल की पड़ताल करें तो उभर कर आता है कि बिहार चुनाव केवल सत्ता परिवर्तन का नहीं, बल्कि सामाजिक प्रतिनिधित्व के नए संतुलन का चुनाव है। भाजपा-जद (यू) गठबंधन की यह रणनीति बताती है कि एनडीए अब प्रयोग नहीं, स्थायित्व चाहता है— चाहे इसके लिए उसे सामाजिक विस्तार का कुछ हिस्सा क्यों न छोड़ना पड़े। यह रणनीति अल्पकालिक रूप से कारगर हो सकती है क्योंकि एनडीए के पास अब भी ऊँची जातियों, गैर-यादव पिछड़ों और दलित वर्गों का ठोस समर्थन है। परंतु दीर्घकाल में यह मॉडल तभी टिकेगा जब इन वर्गों की आकांक्षाएँ केवल जातीय संतुलन नहीं, बल्कि विकास और रोजगार की ठोस उपलब्धियों से जुड़ सकें। बहरहाल, बिहार की राजनीति इस बार जातीय गणित से ज्यादा रणनीतिक मनोविज्ञान पर निर्भर करेगी। एनडीए का नारा है— "स्थिरता और सुशासन", जबकि राजद का नारा है— "न्याय और अवसर।" अब देखना यह है कि बिहार की जनता किस वादे को अधिक विश्वसनीय मानती है— स्थायित्व का वादा या परिवर्तन का सपना।

संकटमोचन, संगठनशिल्पी और लौहपुरुष...

भारत की राजनीति में कुछ नाम ऐसे होते हैं जो केवल पदों से नहीं, अपने कर्म, दृष्टि, दृढ़ता, संकल्प और राष्ट्रभावना से पहचान पाते हैं। अमित अनिलचंद्र शाह ऐसा ही एक नाम है-संघर्षों में तपे, संगठन के शिल्पी और राष्ट्र की सुरक्षा एवं एकता के प्रहरी। एक प्रभावशाली और कुशल राजनीतिज्ञ के रूप में, अमित शाह का भारतीय राजनीति में एक प्रमुख स्थान है। गृह एवं सहकारिता मंत्री के रूप में उन्होंने भारत की आंतरिक सुरक्षा, सामाजिक एकता और ग्रामीण विकास के क्षेत्रों में जो क्रांतिकारी एवं युगांतकारी कार्य किए हैं, वे उन्हें हमारे समय का 'लौहपुरुष' सिद्ध करते हैं-सरदार वल्लभभाई पटेल की परंपरा के सच्चे उत्तराधिकारी। निश्चित ही शाह एक युगांतरकारी एवं युग-निर्माता लोकनायक हैं। उन्हें अक्सर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का करीबी सहयोगी, कुशल शासक और पार्टी के लिए एक प्रमुख चुनावी रणनीतिकार माना जाता है। एक किशोर के रूप में, वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में शामिल हो गए। यहीं से उनके राजनीतिक सफर की शुरुआत हुई। 1987 में वह भाजपा के युवा मोर्चा के सदस्य बने। गुजरात में नरेंद्र मोदी के मुख्यमंत्री कार्यकाल के दौरान, अमित शाह एक शक्तिशाली नेता के रूप में उभरे। उन्होंने कई महत्वपूर्ण मंत्रालय संभाले, जिनमें गृह, कानून और न्याय और परिवहन शामिल थे। अमित शाह ने सहकारिता मंत्रालय को मात्र एक विभाग नहीं, बल्कि ग्रामीण भारत के पुनर्जागरण का आंदोलन बना दिया। उनकी दृष्टि में सहकारिता केवल आर्थिक संरचना नहीं, बल्कि 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' का व्यवहारिक दर्शन है। उन्होंने शक्कर कारखानों से लेकर डेयरी, कृषि-उद्योग, बीज उत्पादन और विपणन तक सहकारिता को एक नई गति दी। देश के पहले राष्ट्रीय सहकारिता नीति मसौदे की तैयारी, पीएसी के डिजिटलीकरण और 200,000 प्राथमिक कृषि साख समितियों को मल्टी-डायमेंशनल मॉडल में बदलने की दिशा में उनका काम ऐतिहासिक है। उनके नेतृत्व में सहकारिता अब आत्मनिर्भर भारत की रीढ़ बन चुकी है, जहाँ किसान केवल उत्पादक नहीं, बल्कि साझेदार हैं। अमित शाह ने सहकारिता को नई भाषा दी-"सहकार से समृद्धि"। भारत के भीतरी हिस्सों में दशकों से नक्सलवाद ने भय, असुरक्षा और विकासहीनता का माहौल बनाया था। अमित शाह के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने 'समग्र रणनीति' के तहत नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में निर्णायक कार्रवाई की। कानून-व्यवस्था, खुफिया सूचना और स्थानीय विकास के त्रिस्तरीय ढांचे पर आधारित इस नीति ने नक्सलवाद को जड़ों से हिला दिया। आज भारत के 90 प्रतिशत से अधिक नक्सल क्षेत्र शांति के मार्ग पर लौट रहे हैं, निकट भविष्य में भारत नक्सल मुक्त राष्ट्र बन जायेगा, यह अमित शाह की सूझबूझ, संकल्प और दृढ़ता का परिणाम है। उनका विश्वास रहा-"गोलियों से नहीं, विकास और संवाद से आतंक मिटाया जा सकता है।" उनकी अलग कार्यशैली की झलक अध्यक्ष बनने के बाद से ही पार्टी को दिखने लगी थी। अमित शाह का नाम जम्मू-कश्मीर के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा। उनकी रणनीति और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में अनुच्छेद 370 का हटाया जाना केवल एक संवैधानिक निर्णय नहीं, बल्कि राष्ट्र की अखंडता का संकल्प था। यह उस विभाजनकारी मानसिकता पर अंतिम प्रहार था जिसने वर्षों तक कश्मीर को अलगाव की आग में झोंक रखा था। आज घाटी में तिरंगा गर्व से लहराता है, पर्यटन और निवेश के नए द्वार खुल रहे हैं, और युवाओं में आत्मविश्वास लौट रहा है-यह अमित शाह की निर्भीक राजनीतिक इच्छाशक्ति का परिणाम है। उन्होंने संसद में कहा था-"कश्मीर भारत का मुकुट है, और जब तक इसकी हर घाटी में शांति और विकास नहीं आता, तब तक हमारा प्रयास अधूरा रहेगा।" शाह की कार्यशैली में सबसे अहम है कि किसी चीज को पहले से भांपने की। कश्मीर से 370 हटाने का मामला हो या फिर किसी चुनावी रणनीति की तैयारी, उन्हें अंदाजा हो जाता है कि किस मोहरे को कहां बिठाना है। इसी का असर है कि अनुच्छेद 370 हटाने के बाद अब तक कश्मीर में शांति एवं वहां शांतिपूर्ण चुनाव का होना है तो अयोध्या जैसे सदियों के विवाद का अंत शांतिपूर्ण तरीके से हो जाना है। गृह मंत्री के रूप में अमित शाह ने देश की सुरक्षा व्यवस्था को नई ऊँचाई दी। आतंकी नेटवर्क के विरुद्ध कड़े कानून, एनआईए की शक्ति में वृद्धि, सीमा सुरक्षा में तकनीकी नवाचार और पुलिस सुधारों की नई पहल-इन सबने भारत की आंतरिक मजबूती को सुदृढ़ किया है। उन्होंने 'शून्य सहनशीलता नीति' को व्यवहार में उतारा। चाहे दिल्ली दंगे हों या सीमा पार आतंकवाद की चुनौती-हर परिस्थिति में उनका निर्णय तेज, संतुलित और राष्ट्रहित में रहा। उनके कार्यकाल में भारत में आंतरिक सुरक्षा का सबसे स्थिर दौर देखा जा रहा है, जहाँ आतंक, नक्सलवाद और अलगाववाद तीनों पर नियंत्रण स्थापित हुआ है। राजनीतिक दृष्टि से अमित शाह को 'मोदी के हनुमान' कहा जाता है, क्योंकि वे न केवल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सबसे विश्वसनीय सहयोगी हैं, बल्कि उनकी दृष्टि को व्यवहार में उतारने वाले कर्मयोद्धा भी हैं। 2014 से 2020 तक, उन्होंने भाजपा के 10वें अध्यक्ष के रूप पार्टी को 70 से अधिक देशों के बराबर सदस्य संख्या वाला विश्व का सबसे बड़ा राजनीतिक संगठन बनाया। 2014 और 2019 के चुनावों में उनकी रणनीति, संगठन और जनसंपर्क ने भाजपा को ऐतिहासिक विजय दिलाई। उनके रणनीतिक कौशल ने पार्टी को सफलता की नई ऊंचाइयों तक पहुँचाया। लेकिन उनकी पहचान राजनीति से परे है-वे राष्ट्रीय एकता के संरक्षक, सुरक्षा के प्रहरी और सहकारिता के संचारक हैं। अमित शाह ने संगठन के बाद सरकार में भी अपनी कौशल क्षमता का लोहा मनवाया तो जब भी संसदीय इतिहास में भारत के मोदीमय होने की गाथा का वर्णन होगा, उसमें 'चाणक्य नीति' की तरह 'शाह नीति' का जिक्र स्वाभाविक होगा। अमित शाह की यह रणनीति पार्टी नेताओं को भी तब समझ आई जब चुनावों के आधिकारिक पोस्टरों-बैनरों पर भी शाह की तस्वीर नजर नहीं आई, दरअसल वे पूरे चुनाव को मोदीमय करने की 'शाह नीति' थी। इसलिए शाह ने एक स्पष्ट निर्णय लिया कि प्रचार सामग्रियों पर सिर्फ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ही होंगे। आधुनिक राजनीति का चाणक्य कहें या फिर मोदी के भरोसेमंद सारथी, इसी खास सोच की वजह से भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह की यह अमिट पहचान बन चुकी है। अमित शाह को एक उत्कृष्ट संगठक और अभियान रणनीतिकार माना जाता है। उनके समर्थक उन्हें हिंदू धर्म का महान रक्षक मानते हैं, जबकि उनके आलोचक उन्हें एक धुरवीकरण करने वाली शख्सियत के रूप में देखते हैं। वह अपनी राजनीतिक कुशलता और जमीन से जुड़कर काम करने के लिए जाने जाते हैं। अमित शाह का राजनीतिक करियर उनके रणनीतिक कौशल, संगठन क्षमता और कठोर निर्णय लेने की प्रवृत्ति को दर्शाता है। एक छोटे कार्यकर्ता से लेकर देश के गृह मंत्री तक का उनका सफर भारतीय राजनीति में उनके मजबूत प्रभाव का प्रमाण है। वह भविष्य में भी भारतीय राजनीतिक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति बने रहने की संभावना है। अमित शाह का व्यक्तित्व सरदार वल्लभभाई पटेल की स्मृति को सजीव करता है। जहाँ पटेल ने रियासतों का विलय किया, वहाँ शाह ने विचारों का एकीकरण किया। जहाँ पटेल ने लौह इच्छाशक्ति से भारत का नक्शा जोड़ा, वहाँ शाह ने अखंड भारत की भावना को राजनीतिक और सामाजिक धरातल पर साकार किया। उनके जीवन का सूत्रवाक्य रहा है-"व्यक्ति नहीं, राष्ट्र सर्वोपरि।" शाह ने राष्ट्रवाद को सर्वोपरि रखा तो 'काम रुके ना, देश झुके ना' के नारे के साथ विकास को भी उसमें जोड़ा। चुनौतियों से जूझने की उनकी छवि ही उन्हें जुझारू और लक्ष्य के प्रति जुनूनी बनाती रही है। अमित शाह की कार्यशैली अनूठी एवं विलक्षण है, वे जब कोई काम हाथ में लेते हैं तो स्पष्ट लक्ष्य सामने होता है और उसके हिसाब से रणनीति पर काम करते हैं। भले नतीजे पक्ष में आए या खिलाफ, इसकी परवाह नहीं करते। उनका विजन स्पष्ट रहता है और नतीजों के बजाए काम करने पर फोकस रहता है। इसलिए मोदी-शाह की जोड़ी हर चुनाव को युद्ध के रुप में लड़ने के लिए जानी जाती है। शाह का मानना है कि संगठन को हमेशा 24 घंटे 365 दिन गतिशील रखना चाहिए। यह काम वे अपने पांच दशक के राजनीतिक सफर में, वार्ड के बूथ प्रभारी के तौर से करते रहे हैं। गीत-संगीत के शौकीन शाह निदा फाजली के प्रशंसकों में से हैं। खाने-पीने के शौकीन जरुर हैं, लेकिन संयमित और अनुशासित भोजन ही लेते हैं। अमित शाह केवल एक राजनेता नहीं, बल्कि एक युग का नेतृत्व करने वाले कर्मयोगी हैं। उनकी राजनीति में चातुर्य नहीं, दृष्टि है; उनके निर्णयों में कठोरता नहीं, राष्ट्रभक्ति की गहराई है। चाहे सहकारिता का नवजागरण हो, सुरक्षा का सुदृढ़ीकरण या कश्मीर का एकीकरण-हर क्षेत्र में उन्होंने यह सिद्ध किया है कि यदि नीयत सच्ची हो और दृष्टि व्यापक तो कोई भी परिवर्तन असंभव नहीं। भारत के इतिहास में अमित शाह उस विरल श्रेणी के नेता हैं जिनके कार्यों ने राष्ट्र की दिशा बदली है-वास्तव में वे आज के "संकटमोचन, संगठनशिल्पी और लौहपुरुष" हैं।

लग्जरी लोकपाल बनेंगे भ्रष्टाचार विरोधी!

लोकपाल कार्यालय द्वारा जारी टेंडर में कहा गया है कि ये वाहन संस्थान के "अध्यक्ष एवं सदस्यों" के उपयोग हेतु होंगे। सवाल यह है कि एक ऐसी संस्था, जिसे सार्वजनिक धन की शुचिता पर नजर रखनी चाहिए, वह खुद इतने महंगे वाहनों की खरीद को कैसे उचित ठहरा सकती है? भारत में भ्रष्टाचार के खिलाफ एक सशक्त और स्वतंत्र संस्था के रूप में लोकपाल का गठन किया गया था। उद्देश्य स्पष्ट था— सत्ता के गलियारों में फैले भ्रष्टाचार पर नकेल कसना और सार्वजनिक जीवन में शुचिता को संस्थागत रूप देना। परंतु विडंबना देखिए कि आज वही संस्था, जिसके गठन से आम जनता ने पारदर्शिता और सादगी की उम्मीद की थी, अब अपनी छवि पर सवालों के घेरे में है। वजह है लोकपाल कार्यालय की ओर से सात बीएमडब्ल्यू 330Li एम स्पोर्ट कारों की खरीद के लिए जारी किया गया करोड़ों रुपये का निविदा आमंत्रण। यह कदम न केवल नैतिक दृष्टि से सवाल खड़े करता है, बल्कि उस वैचारिक आधार को भी कमजोर करता है जिस पर लोकपाल की इमारत खड़ी की गई थी। जब संस्था का गठन हुआ था, तब लोग उम्मीद कर रहे थे कि लोकपाल सत्ताधारी वर्ग की जवाबदेही तय करेगा। लेकिन आज, जब लोकपाल

खुद विलासिता की राह पर अग्रसर दिखाई देता है, तो यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या यह वही संस्था है जिसके लिए देश की जनता सड़कों पर उतरी थी? हम आपको बता दें कि लोकपाल कार्यालय द्वारा जारी टेंडर में कहा गया है कि ये वाहन संस्थान के "अध्यक्ष एवं सदस्यों" के उपयोग हेतु होंगे। सवाल यह है कि एक ऐसी संस्था, जिसे सार्वजनिक धन की शुचिता पर नजर रखनी चाहिए, वह खुद इतने महंगे वाहनों की खरीद को कैसे उचित ठहरा सकती है? जब सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश भी सामान्य सिडान कारों से कार्य कर सकते हैं, तब लोकपाल के लिए करोड़ों की जर्मन गाड़ियाँ क्यों आवश्यक हैं? कांग्रेस नेता पी. चिदंबरम ने इसी तर्क को रेखांकित करते हुए पूछा है, "जब सर्वोच्च न्यायालय के माननीय न्यायाधीश साधारण गाड़ियों में चलते हैं, तो लोकपाल को बीएमडब्ल्यू की क्या आवश्यकता है?" यह प्रश्न केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि नैतिक और प्रशासनिक संवेदनशीलता का भी है। जनता के कर के पैसे से बनी संस्थाओं की जवाबदेही जनता के प्रति होती है। परंतु जब ऐसी संस्थाएँ अपने ही संसाधनों को विलासिता में व्यय करने लगें, तो यह संकेत है कि व्यवस्था में आत्ममुग्धता प्रवेश कर चुकी है। यह बात भी विचारणीय है कि अब तक लोकपाल ने कितने बड़े भ्रष्टाचार मामलों में कार्रवाई की है? वर्ष 2014 से लेकर अब तक, इस संस्था की उपलब्धियाँ नगण्य रही हैं। कई राज्यों में लोकायुक्त सक्रिय हैं, लेकिन राष्ट्रीय लोकपाल की भूमिका अधिकतर औपचारिक ही दिखी है। ऐसे में करोड़ों रुपये खर्च कर विलासिता का यह प्रदर्शन, न केवल नैतिक असंगति है, बल्कि जनता के विश्वास का भी दुरुपयोग है। विपक्षी नेताओं के अलावा नीति आयोग के पूर्व सीईओ अमिताभ कांत ने भी इस निविदा पर आपत्ति जताते हुए कहा है कि लोकपाल को यह टेंडर रद्द कर "मेक इन इंडिया" की भावना के अनुरूप महिंद्रा या टाटा के इलेक्ट्रिक वाहनों का चयन करना चाहिए था। यह सुझाव केवल आर्थिक दृष्टि से नहीं, बल्कि पर्यावरणीय और सांस्कृतिक दृष्टि से भी सार्थक है। जब देश "आत्मनिर्भर भारत" और "ईवी मिशन" की दिशा में अग्रसर है, तब विदेशी विलासिता को अपनाना आत्मनिर्भरता की भावना के विपरीत है। देखा जाये तो लोकपाल जैसी संस्था का नैतिक बल उसकी सादगी और ईमानदारी में निहित होता है। यदि वही संस्था आम जनता से कटकर अभिजात्य मानसिकता अपनाने लगे, तो उसका नैतिक अधिकार स्वतः कमजोर हो जाता है। यह केवल एक टेंडर का मामला नहीं है; यह उस सोच का प्रतीक है जिसमें "सेवा" की जगह "सुविधा" ने ले ली है। बहरहाल, लोकपाल के गठन का मकसद भ्रष्टाचार से लड़ना था, न कि जनसंसाधनों से विलासिता का आनंद लेना। इस प्रकरण ने यह स्पष्ट कर दिया है कि यदि संस्थाएँ अपने आदर्शों से विचलित हों, तो वह जनता की नज़र में अपनी विश्वसनीयता खो देती हैं। लोकपाल को चाहिए कि वह इस निर्णय पर पुनर्विचार करे, निविदा को रद्द करे और एक बार फिर उस सादगी की राह पर लौटे, जिसकी प्रेरणा से उसका जन्म हुआ था।

गरीबी घट रही...

इन दिनों प्रकाशित हो रही वैश्विक आर्थिक-सामाजिक असमानता संबंधी रपटों में यह टिप्पणी की जा रही है कि दुनिया में भारत में अत्यधिक गरीबी में सबसे तेजी से कमी आ रही है, लेकिन यहां अमीर और गरीब के बीच खाई भी बढ़ रही है। सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के मामले में जापान को पीछे छोड़ कर भारत दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने के दावे किए जा रहे हैं, लेकिन एक सच यह भी है कि जापान की प्रति व्यक्ति आय भारत की तुलना में लगभग 11.5 गुना अधिक है। ऐसे में देश में प्रति व्यक्ति आय में तेज वृद्धि के साथ आम आदमी की आमदनी में तेज वृद्धि से ही उसकी मुस्कुराहट बढ़ाई जा सकती है। हालांकि यह चुनौतीपूर्ण काम है। यह महत्त्वपूर्ण बात है कि 'एम3एम हुरुन इंडिया रिच' की 2025 की सूची के हिसाब से भारत में अरबपतियों की संख्या बढ़ी है। देश में अब 358 अरबपति हैं, जो तेरह साल पहले की तुलना में छह गुना अधिक हैं। इस सूची के मुताबिक भारत में 1687 ऐसे भारतीय हैं जिनकी संपत्ति एक हजार करोड़ से अधिक है। इस सूची में शामिल सभी लोगों की कुल संपत्ति 167 लाख करोड़ रुपए है जो पिछले वर्ष 2024 की तुलना में पांच फीसद अधिक है। यह भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के लगभग आधे के बराबर है। पिछले दो वर्षों में भारत में औसतन हर सप्ताह एक नया अरबपति बना है। इस रपट में यह भी बताया गया है कि भारत के सभी धनी व्यक्तियों ने प्रतिदिन 1991 करोड़ रुपए की दर से संपत्ति अर्जित की है। भारत में एक ओर अमीरों की संख्या बढ़ रही है, वहीं पिछले दिनों प्रकाशित विश्व बैंक की वैश्विक गरीबी संबंधी रपट के मुताबिक, देश में अत्यधिक गरीबी में रहने वाले लोगों की संख्या में काफी गिरावट दर्ज की गई है। अत्यधिक गरीबी से करीब सत्ताईस करोड़ देशवासी बाहर निकले हैं। विश्व बैंक ने अत्यधिक गरीबी रेखा के निर्धारण के संबंध में जो नए अनुमान जारी किए हैं, उनके मुताबिक निम्न आय वाले देशों के लिए अत्यधिक गरीबी की रेखा 2.15 डालर प्रतिदिन के उपभोग व्यय से बढ़ा कर अब प्रतिदिन तीन डालर उपभोग व्यय पर निर्धारित की गई है। ऐसे में देश में बेहद निर्धन लोगों की जो संख्या वर्ष 2011-12 में 27.1 फीसद थी, वह वर्ष 2022-23 में घट कर केवल 5.3 फीसद रह गई है। इससे अत्यधिक

गरीबी में रहने वाले लोगों की संख्या 34.44 करोड़ से घट कर 7.52 करोड़ रह गई है। निश्चित रूप से यह परिदृश्य भारत की प्रगति का संकेत देता है। देश में करीब पचपन करोड़ से अधिक जनधन खातों (जे), करीब 138 करोड़ आधार कार्ड (ए) और करीब 119 करोड़ मोबाइल उपभोक्ताओं (एम) की शक्ति वाले 'जैम' से सुगठित बेमिसाल डिजिटल ढांचा गरीबों के सशक्तीकरण में असाधारण भूमिका निभा रहा है। इस 'जैम' (JAM) के बल पर देश के गरीब लोगों के खातों में सीधे सहायता राशि हस्तांतरित हो रही है। इसमें कोई दो मत नहीं है कि प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना (पीएमजीकेएवाई) के तहत अस्सी करोड़ से अधिक गरीबों और कमजोर वर्ग के लोगों को सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) के माध्यम से मुफ्त अनाज वितरित कर उनकी सहायता की जा रही है। सरकार ने गरीबों को 2028 तक मुफ्त अनाज देना सुनिश्चित किया है। कई और योजनाओं से भी गरीबी घट रही है। इनमें स्वच्छ ईंधन के लिए उज्ज्वला योजना, सभी घरों में बिजली के लिए सौभाग्य योजना, पेयजल सुविधा के लिए जल जीवन मिशन, डिजिटल इंडिया, स्वच्छ शौचालय और आयुष्मान भारत जैसी योजनाएं शामिल हैं। हाल ही में कुआलालम्पुर में आयोजित विश्व सामाजिक सुरक्षा मंच ने भारत को अंतरराष्ट्रीय सामाजिक सुरक्षा पुरस्कार 2025 से सम्मानित किया। यह पुरस्कार अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (आइएलओ) की उस रपट पर आधारित है, जिसमें कहा गया है कि भारत में वर्ष 2025 में 64 फीसद से अधिक आबादी यानी करीब चौरानबे करोड़ से अधिक लोग किसी न किसी सामाजिक सुरक्षा योजना से लाभान्वित हो रहे हैं, जबकि वर्ष 2015 में सामाजिक सुरक्षा योजनाएं पच्चीस करोड़ से भी कम लोगों तक पहुंच रही थीं। यह सामाजिक सुरक्षा और सामाजिक न्याय की बेहतरीन तस्वीर है। आइएलओ के महानिदेशक गिल्बर्ट एफ हुंगबो का कहना है कि सामाजिक सुरक्षा में विश्व स्तर पर भारत ने दूसरा स्थान हासिल किया है। पिछले एक दशक में सामाजिक सुरक्षा के दायरे में आने वाले लोगों की संख्या भारत में सबसे तेजी से बढ़ी है। गरीबों और मजदूरों के लिए सरकार की जन केंद्रित कल्याणकारी नीतियों से सामाजिक सुरक्षा का भी विस्तार हुआ है। भारत में अमीर और गरीब के बीच खाई कम करने और आम आदमी की सामाजिक सुरक्षा के लिए अभी कई बातों पर ध्यान देना जरूरी है। इस समय देश के करीब बावन करोड़ लोगों का सामाजिक सुरक्षा की छतरी के बाहर होना बड़ी आर्थिक-सामाजिक चुनौती है। खासतौर से देश के असंगठित क्षेत्र, 'गिग वर्कर्स' और आम आदमी की सामाजिक सुरक्षा के लिए अभी मीलों चलना बाकी है। आर्थिक विकास और नई तकनीकों का इस्तेमाल गरीबों के हित में करना जरूरी है। कर सुधारों का लाभ गरीब और कमजोर वर्ग के लोगों तक पहुंचना चाहिए। इन दिनों नए सुधारों और नई कर व्यवस्था पर प्रकाशित हो रही रपटों में कहा जा रहा है कि इन कर सुधारों से आम आदमी की जिंदगी आसान होगी। ऐसे में कई परिवारों को आजीविका कमाने और युवाओं के लिए नौकरी के अवसर पैदा करने में मदद मिलेगी। इससे देश के कमजोर वर्ग के लोगों की आमदनी में वृद्धि होगी। चूंकि देश का लक्ष्य 2047 में आम आदमी की खुशहाली के साथ विकसित भारत बनाना सुनिश्चित किया गया है, तो इस लक्ष्य को पाने के लिए कई बातों पर रणनीतिक रूप से ध्यान देना होगा। देश से गरीबी घटने और अर्थव्यवस्था बढ़ने के बावजूद अभी हमें आत्मनिर्भरता की डगर पर और तेजी से बढ़ना होगा। हमें अभी आम आदमी के कल्याण और प्रतिव्यक्ति आय बढ़ाने के लिए मीलों चलना है। भारत के दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने के दावे जरूर किए जा रहे हैं, लेकिन हमें अभी इससे संतुष्ट नहीं होना चाहिए। सच्चाई यह भी है कि प्रति व्यक्ति आय के मामले में भारत अब भी कई देशों से बहुत पीछे है। उम्मीद की जानी चाहिए कि सरकार महात्मा गांधी की आर्थिक-सामाजिक विचारधारा और अंत्योदय की अवधारणा को ध्यान में रखते हुए देश के कोने-कोने में स्वदेशी अभियान को आगे बढ़ाने के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता देगी। इसके साथ ही देश भर में स्थापित उद्योग-कारोबार के द्वारा भी स्वदेशी वस्तुओं को बेचने और करोड़ों नागरिकों द्वारा स्वदेशी वस्तुओं को खरीदने के अभियान को भी प्राथमिकता दी जाएगी। बहुआयामी रणनीतिक प्रयासों के आधार पर हम उम्मीद कर सकते हैं कि देश में अमीर और गरीब वर्ग के बीच खाई में कमी आएगी। आम आदमी की खुशहाली बढ़ेगी। साथ ही भारत वर्ष 2047 तक विकसित देश बनने की डगर पर आगे बढ़ते हुए दिखाई देगा।

चीन के नए स्टील्थ ड्रोन की पहली उड़ान से हलचल, क्या ड्रैगन ने बना लिया बिना पायलट का बॉम्बर, अमेरिका-भारत की बढ़ी टेंशन

एजेंसी बीजिंग

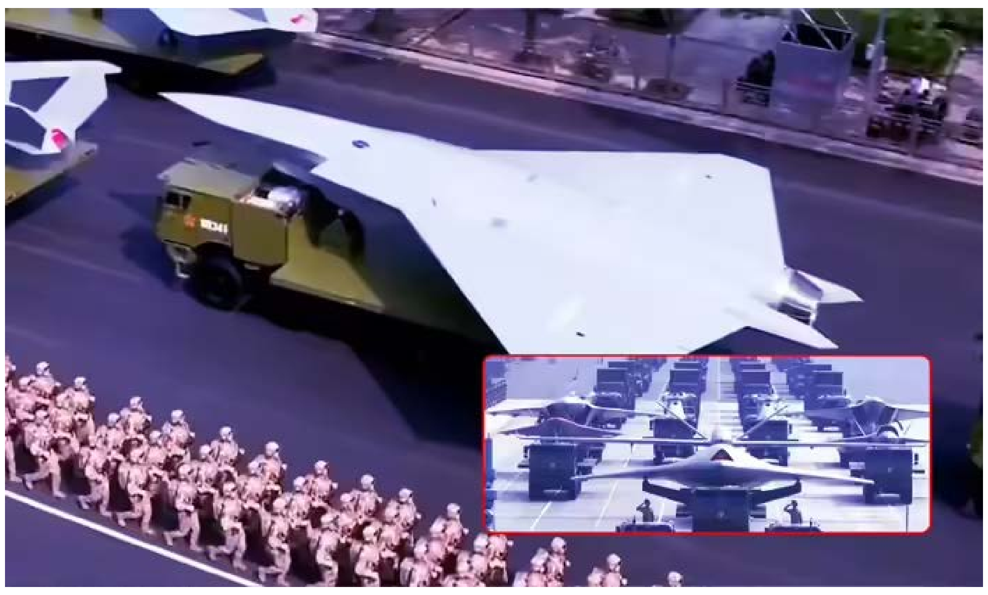

चीन ने अपने नए आधुनिक हथियार से एक बार फिर दुनिया का ध्यान खींचा है। चीन का नया लड़ाकू फ्लाइंग-विंग ड्रोन पहली बार उड़ान भरते हुए देखा गया है। इसे अगली अगली पीढ़ी का बिना पायलट वाला बमवर्षक माना जा रहा है। इस बड़े स्टील्थ क्रैंक्ड काइट ड्रोन का वीडियो की चीनी सोशल मीडिया पर चर्चा में है। इसे अनौपचारिक रूप से GJ-X कहा जा रहा है। इसने अमेरिका का भी ध्यान खींचा है क्योंकि यह अपनी श्रेणी में अमेरिकी बमवर्षकों के लिए चुनौती बनेगा। वहीं भारत के लिए भी ये चिंता बढ़ाने वाला हो सकता है। द वॉर जोन की एक रिपोर्ट के अनुसार, यह विमान बमवर्षक या उससे मिलते-जुलते डिजाइन वाला है। इसी तरह का हथियार अगस्त में झिंजियांग उइगर स्वायत्त क्षेत्र में चीन के मालन एयरबेस पर ली गई सैटेलाइट तस्वीरों में कैद हुआ था। मालन बेस के इस विमान का पंख फैलाव 42 मीटर (138 फीट) है, जो इसे बिना चालक वाले स्टील्थ विमानों की दुर्लभ श्रेणी में रखता है। चीन का यह नया हथियार नॉर्थ्रॉप ग्रुम्मन बी-21 रेडर के बराबर साइज का है, जो एक अमेरिकी स्टील्थ रणनीतिक बमवर्षक है। इसका पंख फैलाव 40-42 मीटर है। वर्तमान में विकासाधीन B-21 पारंपरिक और परमाणु दोनों प्रकार के पेलोड ले जाने में सक्षम होने की उम्मीद है। B-52 के साथ मिलकर भविष्य के अमेरिकी बमवर्षक बल की रीढ़ बनेगा। नए चीनी ड्रोन का उद्देश्य अभी स्पष्ट नहीं है। रिपोर्ट के अनुसार, कुछ सैन्य पर्यवेक्षकों ने कहा कि यह अभियानों पर केंद्रित बड़ा मानवरहित लड़ाकू वायुयान है। कुछ इसे एक मानवरहित स्टील्थ बॉम्बर कह रहे हैं। चीनी सैन्य पर्यवेक्षक और शेन्जेन टीवी के टिप्पणीकार चेन शी ने कहा कि मालन बेस पर देखा गया ड्रोन एक मध्यम दूरी का रणनीतिक बमवर्षक था। चेन ने कहा है कि अगली पीढ़ी का एच-20 बमवर्षक अभी जारी नहीं किया गया है लेकिन अब हमारे पास बी-21 के समान आकार का एक रणनीतिक स्तर का मध्यम दूरी का बमवर्षक है। साल 2016 में चीन ने एक नए लंबी दूरी के बमवर्षक के विकास की घोषणा की थी। इसे बाद में एच-20 स्टील्थ बॉम्बर नाम दिया गया। वॉर जोन की रिपोर्ट में कहा गया है कि मालन बेस की तस्वीरों में दिख रहे विमान में अमेरिकी B-2 स्टील्थ बॉम्बर के समान स्प्लिट रडर थे। इसमें जेट की पूंछ के ऊपर एक छोटा, केंद्र से हटकर उभार देखा गया है। इससे पता चलता है कि यह दो इंजनों वाला डिजाइन वाला था। यह नया मॉडल उन कुछ नए मानवरहित विमानों में एक है, जिनका चीन परीक्षण कर रहा है। GJ-X का डिजाइन CH-7 या कैहोंग-7 नामक ड्रोन से स्पष्ट रूप से मिलता-जुलता है, जिसे पिछले साल नवंबर में चीन के झुहाई एयर शो में प्रदर्शित किया गया था। मई में शिन्हुआ की एक रिपोर्ट के अनुसार, CH-7 ड्रोन का पंख फैलाव 27.3 मीटर, अधिकतम टेक-ऑफ भार 8 टन और क्रूज गति 0.5 मैक है, जो इसे एक उच्च गति वाला टोही विमान बनाता है।

गुलाम जैसी जिंदगी जीने को मजबूर भारतीय... कफाला सिस्टम में कैसे होता है शोषण, सऊदी के बाद क्या बाकी देश भी करेंगे खत्म

एजेंसी रियाद

सऊदी अरब की सरकार ने कफाला सिस्टम को खत्म कर दिया है। अरब देशों में बीते कई दशकों से ये सिस्टम भारतीयों के लिए बड़ी परेशानी का सबब रहा है। इस सिस्टम की वजह से अरब में काम करने के लिए जाने वाले लाखों भारतीयों को मूल मानवाधिकारों से वंचित होना पड़ता है। कफाला एक तरह से लाखों भारतीयों को अरब देशों में बंधक मजदूर या गुलाम की तरह रहने पर मजबूर कर देता है। सऊदी में इसके खत्म होने से भारत, पाकिस्तान जैसे देशों के लोगों ने खासतौर से राहत की सांस ली है, जहां से बड़ी तादाद में कामगार सऊदी जाते हैं। हालांकि कई गल्फ देशों में ये सिस्टम अभी बरकरार है। कफाला की वजह से कैसे भारतीय कामगार गल्फ में जाकर गुलामी को मजबूर हो जाते है, इसकी बानगी इंडिया टुडे की रिपोर्ट से मिलती है। रिपोर्ट बताती है कि 2017 में कर्नाटक की एक नर्स 25,000 रुपए प्रति माह वेतन के वादे के साथ सऊदी अरब पहुंची। उसे उसके कफील (नियोक्ता) ने तस्करी कर गुलाम बना लिया गया। आठ महीने बाद उसे आजादी मिल सकी। ऐसे भी उदाहरण हैं, जब इस सिस्टम में फंसकर कई लोगों ने मौत को गले लगा लिया। कपाला खत्म होने से सऊदी में केस आगे ना होने की उम्मीद जगती है। सऊदी अरब में कफाला खत्म हो गया है लेकिन खाड़ी सहयोग परिषद (जीसीसी) के कई देशों में यह जारी है। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (आईएलओ) और ह्यूमन राइट्स वॉच (एचआरडब्ल्यू) के आंकड़ों के हिसाब से खाड़ी देशों में 2.4 करोड़ श्रमिक कफाला के नियंत्रण में हैं। इनमें से सबसे बड़ा हिस्सा 75 लाख भारतीयों का है। अधिकार समूहों ने कफाला की 'आधुनिक गुलामी' कहकर आलोचना की है। कफाला व्यवस्था में कामगारों को एक ही नियोक्ता से बंधना पड़ता था। इससे उन्हें नौकरी बदलने, देश छोड़ने और यहां तक कि दुर्व्यवहार की रिपोर्ट करने के लिए भी अपने प्रायोजक की इजाजत जरूरी होती थी। यानी कामगार काम में दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ रहा है तो भी इसकी शिकायत नहीं कर सकता है। यह सीधेतौर पर किसी कामगार की स्थिति को गुलाम जैसी बना देता है। कफाला एक ऐसी व्यवस्था है, जो कामगारों को शोषण और अमानवीय परिस्थितियों में रहने को मजबूर करती है। कफाला को आधुनिक गुलामी कहना बिल्कुल सही है। इस सिस्टम में नियोक्ता को मिली शक्तियां कामगार का पासपोर्ट जब्त करने, वेतन ना देने, काम के घंटे बढ़ाने, शारीरिक और यौन हिंसा, यहां तक कि बंधक बनाकर काम कराने का दरवाजा खोलती हैं। भारत के घरेलू सहायक और कम वेतन वाले मजदूरों के कई ऐसे मामले हैं, जहां वह बिना किसी कानूनी सहायता के अलगाव में फंस गए। एमनेस्टी, एचआरडब्ल्यू और आईएलओ की रिपोर्टें बताती हैं कि हर साल कई ऐसे मामले आते हैं। यहां तक कि कई भारतीय कामगारों की जान भी अमानवीय परिस्थितियों में काम करने की वजह से गई। मई 2025 में बोस्टन विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर कहा गया कि 'कफाला प्रणाली आधुनिक दासता को बढ़ावा देती है।' यह सिस्टम एक प्रकार की अप्रत्यक्ष दासता है, जिससे प्रवासियों के भयावह परिस्थितियों से बचना मुश्किल हो जाता है। इसमें अमानवीय परिस्थिति बनती हैं क्योंकि यह श्रमिकों को पूरी तरह से उनके नियोक्ताओं पर निर्भर बना देती है।

शुक्रिया अदा करता हूं... भारत के काबुल तकनीकी मिशन को दूतावास का दर्जा देने से तालिबान खुश, आया बड़ा बयान

एजेंसी ढाका

अफगानिस्तान के तालिबान प्रशासन ने काबुल स्थित भारतीय तकनीकी मिशन को दूतावास में अपग्रेड करने के भारत के फैसले का स्वागत किया है। कतर में काबुल के राजदूत सुहैल शाहीन ने कहा कि भारत का यह कदम क्षेत्रीय शांति और स्थिरता में मदद करेगा। शाहीन ने भारत का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि अफगानिस्तान सभी मिशनों की सुरक्षा सुनिश्चित की जाएगी और किसी को भी कोई दिक्कत नहीं होनी दी जाएगी। द हिंदू को दिए एक बयान में, तालिबान प्रशासन के अंतर्राष्ट्रीय मीडिया प्रवक्ता शाहीन ने भारत के फैसले पर कहा, 'द्विपक्षीय संबंधों को सामान्य पटरी पर लाने, विश्वास बनाने, व्यापार और सहयोग को बढ़ावा देने और क्षेत्रीय शांति में रचनात्मक भूमिका निभाने के लिए यह एक उचित कदम है। मैं नई दिल्ली के इस फैसले का स्वागत करता हूं।' भारत ने अफगानिस्तान के साथ अपने द्विपक्षीय संबंधों को गहरा करने के व्यापक प्रयासों के तहत मंगलवार को काबुल में अपने तकनीकी मिशन को दूतावास का दर्जा देने की घोषणा की है। अफगानिस्तान के विदेश मंत्री आमिर खान मुत्तकी की हालिया भारत यात्रा के बाद दिल्ली ने यह अहम ऐलान किया है। अगस्त 2021 में तालिबान के अफगानिस्तान की सत्ता पर काबिज होने के बाद भारत ने काबुल स्थित अपने दूतावास से अपने अधिकारियों को वापस बुला लिया था। इसके बाद जून 2022 में भारत ने तकनीकी टीम तैनात करके अफगानिस्तान की राजधानी में अपनी राजनयिक उपस्थिति फिर से स्थापित की। विदेश मंत्रालय ने कहा कि मुत्तकी की हालिया यात्रा के निर्णय के अनुरूप सरकार तत्काल प्रभाव से काबुल में भारत के तकनीकी मिशन का दर्जा भारतीय दूतावास के समानकर रही है। यह निर्णय पारस्परिक हित के सभी क्षेत्रों में अफगानिस्तान के साथ द्विपक्षीय संबंधों को गहरा करने के संकल्प को दिखाता है। काबुल स्थित भारतीय दूतावास अफगान समाज की प्राथमिकताओं और आकांक्षाओं को ध्यान में रखते हुए अफगानिस्तान के व्यापक विकास, मानवीय सहायता और दक्षता विकास पहल में भारत के योगदान को और बढ़ाएगा। ऐसा माना जा रहा है कि इस मिशन का नेतृत्व उप राजदूत स्तर के राजनयिक करेंगे।

भारत रूसी तेल नहीं खरीदेगा... दिवाली पर PM मोदी को फोन करके ट्रंप ने कर दिया बड़ा दावा, बताया पहले से कम हुई खरीद

एजेंसी वॉशिंगटन

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक बार दावा किया है कि प्रधानमंत्री मोदी ने उनसे कहा है कि भारत रूस से ज्यादा तेल नहीं खरीदेगा। ट्रंप ने ये दावा मंगलवार देर रात पीएम मोदी से फोन पर बातचीत के बाद किया है। ट्रंप ने ये फोन कॉल पीएम मोदी को दीपावली की शुभकामनाएं देने के लिया किया था। पीएम मोदी ने भी फोन पर शुभकामनाओं के लिए राष्ट्रपति ट्रंप का आभार जताया है। ट्रंप ने इसके पहले वॉइट हाउस में एक विशेष दीवाली समारोह में दीया जलाया और बताया कि उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से बातचीत की है। पत्रकारों से बाचतीत में ट्रंप ने एक बार फिर दोहराया कि पीएम मोदी ने उन्हें रूसी तेल खरीद कम करने का आश्वासन दिया है। इसके साथ उन्होंने मई में भारत-पाकिस्तान सैन्य टकराव को रोकने का क्रेडिट भी खुद को दिया। इस दौरान ट्रंप ने पीएम मोदी की जमकर तारीफ करते हुए उन्हें अच्छा दोस्त और महान शख्स कहा। उन्होंने कहा कि भारत और अमेरिका कुछ बेहतरीन समझौतों पर काम कर रहे हैं। ट्रंप ने कहा, मैंने आज प्रधानमंत्री मोदी से बात की। हमारी बातचीत बहुत अच्छी रही... हमने कई मुद्दों पर बात की लेकिन ज्यादातर व्यापार जगत के बारे में। इस दौरान ट्रंप ने अपना भारत के रूसी तेल खरीद को लेकर अपना पुराना दावा दोहराया। उन्होंने कहा, हमारे बीच बहुत अच्छे संबंध हैं और वह रूस से ज्यादा तेल नहीं खरीदेंगे। वह रूस और यूक्रेन की तरह ही युद्ध को खत्म होने देखना चाहते हैं। उन्होंने आगे कहा, 'जैसा कि आप जानते हैं कि वह रूस से बहुत ज्यादा तेल नहीं खरीदेंगे। वे इसे पहले ही कम कर चुके हैं और वे इसे और कम करते जा रहे हैं।' ट्रंप ने पिछले सप्ताह भी इसी तरह का दावा किया था, जिसे भारत ने खारिज कर दिया था। वहीं, ट्रंप के ताजा बयान के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक्स पर पोस्ट कर ट्रंप को उनकी शुभकामनाओं के लिए धन्यवाद दिया। पीएम मोदी ने लिखा, 'राष्ट्रपति ट्रंप, आपके फोन कॉल और दिवाली की हार्दिक शुभकामनाओं के लिए धन्यवाद। रोशनी के इस त्योहार पर, हमारे दो महान लोकतंत्र दुनिया को आशा की किरण दिखाते रहें और सभी रूपों में आतंकवाद के खिलाफ एकजुट रहें।'

धरती के पास एक नहीं अब हैं दो चांद, NASA ने कर दिया कन्फर्म, जान लीजिए क्या है Quasi Moon जो 50 साल रहेगा साथ

एजेंसी वॉशिंगटन

धरती के पास अब एक नहीं बल्कि दो-दो चांद हैं। जी हां, ये किसी साइंस फिक्शन फिल्म की स्क्रिप्ट नहीं है, बल्कि हकीकत है। खगोलविदों ने हमारी पृथ्वी के एक नए साथी की पहचान की है, जो अगले 50 वर्षों तक साथ रहेगा। यह 2025 PN7 नामक एक एस्टेरॉयड है जो लगभग 50 वर्षों तक हमारे ग्रह की परिक्रमा करने वाला है। इसे मिनी मून कहा जा रहा है। हालांकि, वैज्ञानिकों ने साफ किया है कि यह वास्तव में हमारे चंद्रमा जैसा नहीं है। यह एक अर्ध चंद्रमा (quasi-moon) है, जो सूर्य के चारों ओर पृथ्वी की लगभग समान कक्षा और गति से घूमता है। इससे यह भ्रम होता है कि यह हमारे ग्रह की परिक्रमा कर रहा है। लगभग 19 मीटर व्यास वाले इस क्षुद्रग्रह को अगस्त 2025 में खोजा गया था। यह 2083 के बाद कुछ समय तक पृथ्वी की कक्षा के करीब बना रहेगा और उसके बाद धीरे-धीरे बाहरी अंतरिक्ष में चला जाएगा। यूरो वीकली न्यूज की रिपोर्ट से पता चलता है कि 2025 PN7 पिछले कुछ दशकों से पृथ्वी की कक्षा के निकट एक प्रक्षेप पथ (ट्रेजेक्टरी) पर यात्रा कर रहा है। बहुत छोटा होने और धुंधला होने के कारण अब तक इसका पता नहीं चल पाया था। खगोलविदों के आकलन के अनुसार, यह अंतरिक्ष यात्री लगभग 2083 तक पृथ्वी से गुरुत्वाकर्षण के जरिए बंधा रहेगा। वैज्ञानिक इसके मार्ग पर नजर रख रहे हैं, ताकि यह पता लगाया जा सके कि यह हमारी पृथ्वी के चारों ओर इस अस्थिर परिक्रमा को कब तक करता रहेगा। अर्ध चंद्रमा यानी Quasi-Moon उन खगोलीय पिंडों को कहा जाता है, जो पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाते मालूम पड़ते हैं, लेकिन वास्तव में यह सूर्य की परिक्रमा करते हैं। यह भ्रम इसलिए होता है क्योंकि दोनों पिंड सूर्य के चारों ओर लगभग समान परिक्रमा गति साझा करते हैं। जैसे-जैसे पृथ्वी एक पूरे साल का चक्कर पूरा करती है, वैसे-वैसे क्षुद्रग्रह भी हमारे आकाश में बदलते हुए 8 अंक के आकार का पैटर्न का पालन करता दिखाई देता है। हमारा प्राकृतिक चंद्रमा अपने गुरुत्वाकर्षण के चलते पृथ्वी की परिक्रमा करने के लिए बाध्य होता है। वहीं, एक अर्ध चंद्रमा अपनी स्वतंत्रता बनाए रखता है और कभी पूरी तरह से नहीं जुड़ता है। यह केवल पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण से अप्रत्यक्ष रूप से बंधा होता है। यह हल्का सा टच इसे अंततः दूर जाने से पहले वर्षों या सदियों तक पास रखता है।

तालिबान से युद्ध में सऊदी की चुप्पी से पाकिस्तान में बवाल, अवाम ने डिफेंस समझौते को बताया फर्जी, शहबाज घर में फंसे

एजेंसी इस्लामाबाद

सऊदी अरब से रक्षा समझौता करने के बाद पाकिस्तान के नेता ढोल पीट रहे थे। वो इसे भारत के खिलाफ बहुत बड़ा रक्षा समझौता बता रहे थे। शहबाज शरीफ से लेकर पाकिस्तान के ज्यादातर नेता, पाकिस्तान सऊदी डिफेंस समझौते को एक उपलब्धि बता रहे थे। लेकिन सिर्फ 23 दिनों में ये ढोल फट गया। तालिबान ने पाकिस्तान की सेना को सरहद पर घसीट घसीटकर मारा तो सऊदी अरब ने चुप्पी साध ली। सऊदी अरब की तरफ से दोनों पक्षों को सिर्फ संयम बरतने की सलाह दी गई, जिसके बाद अब बड़बोले शहबाज शरीफ और उनके मंत्रियों को समझ नहीं आ रहा कि वो डिफेंस पैक्ट का बचाव कैसे करें। पाकिस्तान-सऊदी सामरिक पारस्परिक रक्षा समझौते (SMDA) को लेकर अब कई लोग दावा कर रहे हैं कि इसे बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया गया था, असल में व्यावहारिक रूप से इसका कोई अस्तित्व ही नहीं था। जबकि, पाकिस्तान ने दावा किया था कि इस रक्षा सौदे के मुताबिक, सऊदी पर हमला पाकिस्तान पर और पाकिस्तान पर हमला सऊदी पर हमला माना जाएगा। लेकिन, सऊदी ने सिर्फ एक सामान्य अपील जारी कर शहबाज शरीफ के डिफेंस पैक्ट की पोल खोल दी। हैरानी की बात देखिए कि तालिबान और पाकिस्तान के बीच सीजफायर, सऊदी अरब ने नहीं, बल्कि कतर ने, तुर्की के सहयोग से करवाया। इसके अलावा महत्वपूर्ण बात यह है कि इस सीजफायर समझौते में भी तालिबान ने बाजी मार ली। तालिबान के अधिकारी, कतर के आधिकारिक युद्धविराम बयानों से "डूरंड रेखा" और "सीमा" शब्द को हटवाने में कामयाब रहे, जबकि पाकिस्तान ने युद्धविराम समझौते के बाद कहा था कि समझौते में डूरंड लाइन विवाद भी शामिल है। इसका मतलब यह हुआ कि अफगान तालिबान ने फिर साबित कर दिया कि वे पाकिस्तान के दावे को नहीं मानते। यह पाकिस्तान के लिए न सिर्फ एक राजनयिक हार थी, बल्कि यह भी संकेत था कि उसके पारंपरिक सहयोगी संकट के वक्त किनारा कर सकते हैं। इस पूरे घटनाक्रम ने पाकिस्तान की संसद और राजनीतिक हलकों में सवालों का तूफ़ान खड़ा कर दिया है। विपक्षी नेताओं ने मांग की है कि सरकार SMDA की पूरी जानकारी सार्वजनिक करे और संसद में बहस कराई जाए, ताकि असली स्थिति साफ हो सके। आलोचकों का कहना है कि अगर ऐसा कोई रक्षा समझौता था, तो फिर सऊदी अरब ने पाकिस्तान के समर्थन में कोई बयान क्यों नहीं दिया, या कम से कम अफगानिस्तान पर दबाव क्यों नहीं बनाया? कुछ विश्लेषकों ने यह भी कहा है कि सऊदी अरब अब पाकिस्तान की बजाय भारत और खाड़ी की स्थिर अर्थव्यवस्थाओं के साथ गहरे आर्थिक रिश्ते बनाने में ज्यादा दिलचस्पी दिखा रहा है।

IPL ऑक्शन से पहले मिल गया चेन्नई सुपर किंग्स को अश्विन का रिप्लेसमेंट, टीम इंडिया का है अहम हिस्सा

एजेंसी नई दिल्ली

चेन्नई सुपर किंग्स अब अगले सीजन के लिए रविचंद्रन अश्विन की जगह लेने के लिए एक खिलाड़ी ढूंढ रही है। अश्विन, जो नौ साल बाद CSK में लौटे थे, उन्होंने पिछले सीजन में 9 मैच खेले और 7 विकेट लिए। अश्विन और संजू सैमसन के बीच ट्रेड की खबरें थीं, लेकिन अश्विन ने IPL से संन्यास लेने का फैसला करके इन अटकलों को खत्म कर दिया। अश्विन के टीम छोड़ने के कारण, CSK को अब उनकी जगह भरने के लिए एक अच्छा विकल्प चाहिए। तमिल समयाम की रिपोर्ट के मुताबिक, CSK की नजर ऑलराउंडर वाशिंगटन सुंदर पर है और उन्होंने गुजरात टाइटंस के साथ संभावित ट्रेड के लिए बातचीत शुरू कर दी है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि गुजरात टाइटंस सुंदर को बिना किसी शर्त के छोड़ने के लिए तैयार हो गया है। अच्छे फॉर्म में होने के बावजूद, सुंदर को पिछले सीजन में गुजरात की प्लेइंग इलेवन में नियमित रूप से जगह नहीं मिली। उन्होंने सिर्फ 6 मैच खेले, जिनमें 2 विकेट लिए और 166.25 की स्ट्राइक रेट से 133 रन बनाए। गुजरात ने उन्हें 3.2 करोड़ में खरीदा था और CSK भी उन्हें इसी कीमत पर लेने की उम्मीद कर रही है। CSK अब युवा और लंबे समय के लिए टीम बनाने पर ध्यान दे रही है। उन्होंने पहले राहुल त्रिपाठी, विजय शंकर, दीपक हुड्डा और रविचंद्रन अश्विन जैसे अनुभवी खिलाड़ियों को शामिल किया था, लेकिन वे कोई बड़ा प्रदर्शन नहीं कर पाए। इस वजह से फैंस में निराशा बढ़ी है। इसके जवाब में CSK मैनेजमेंट ने आने वाली मिनी-ऑक्शन से पहले खराब प्रदर्शन करने वाले कई सीनियर खिलाड़ियों को टीम से बाहर करने का फैसला किया है। अश्विन ने तो टीम द्वारा आधिकारिक तौर पर रिलीज किए जाने से पहले ही संन्यास ले लिया। CSK हमेशा से अनुभवी खिलाड़ियों पर भरोसा करती आई है और अपनी कोर टीम पुराने खिलाड़ियों के इर्द-गिर्द बनाती थी। लेकिन अंबाती रायडू, सुरेश रैना और ड्वेन ब्रावो जैसे बड़े खिलाड़ियों के 2021 के बाद संन्यास लेने या टीम छोड़ने के बाद यह पुरानी रणनीति अब काम नहीं कर रही है। युवा प्रतिभाओं पर निवेश करने के बजाय फ्रेंचाइजी ने रॉबिन उथप्पा और अजिंक्य रहाणे जैसे अनुभवी नामों को मौका दिया, लेकिन यह तरीका लगातार सफल नहीं हो पाया। ऐसे में अब सुंदर जैसे खिलाड़ियों पर पैसे लगाना सीएसके के लिए गेम चेंजर साबित हो सकता है।

ईशान किशन की हो रही घर वापसी, मुंबई इंडियंस से इस खिलाड़ी का कटेगा पत्ता! रोहित शर्मा पर भी अपडेट

एजेंसी नई दिल्ली

आईपीएल 2026 के मिनी ऑक्शन से पहले फ्रेंचाइजियां कुछ प्लेयर्स को ट्रेड कर सकती है। भारतीय विकेटकीपर बल्लेबाज ईशान किशन को लेकर चर्चा काफी तेज हो रही है। उनकी पूर्व फ्रेंचाइजी मुंबई इंडियंस ईशान किशन में काफी ज्यादा दिलचस्पी दिखा रही है। मुंबई उनको एक बार फिर से अपनी टीम में शामिल करने को देख रही है। ईशान किशन को मुंबई इंडियंस द्वारा अप्रोच किया गया है। लेकिन, अब तक कुछ भी पक्का नहीं हुआ है। सिर्फ मुंबई इंडियंस ही नहीं बल्कि कोलकाता नाइटराइडर्स और राजस्थान रॉयल्स भी ईशान किशन में रुचि दिखा रही हैं। साउथ अफ्रीका के रेयान रिकेल्टन ने मुंबई इंडियंस के लिए आईपीएल 2025 में शानदार प्रदर्शन किया था। लेकिन, ईशान किशन एमआई को और भी ज्यादा फ्लेक्सिबिलिटी देते हैं। किशन के होने से मुंबई का विकेटकीपर डिपार्टमेंट भी कवर हो जाएगा और उनके पास एक और विदेशी खिलाड़ी खिलाने का ऑप्शन होगा। इसके अलावा रोहित शर्मा की उम्र को ध्यान में रखते हुए भी एक भारतीय ओपनर के बारे में मुंबई को सोचना होगा। रोहित शर्मा 38 साल के हो गए हैं। अब आईपीएल में भी उनके कुछ ही साल बचे हैं। ऐसे में किशन उनकी जगह भविष्य में बतौर भारतीय ओपनर खेल सकते हैं। मुंबई हमेशा भविष्य के बारे में सोचती है और किशन एक ऐसे खिलाड़ी हैं, जिनपर मुंबई ने पैसा और समय दोनों इनवेस्ट किया है। अब सब कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि मुंबई और हैदराबाद के बीच बातचीत कैसे होती है। शुरुआती बातचीत से ऐसा लग रहा है कि हैदराबाद किशन को जाने देने के लिए अनिच्छुक है, लेकिन अगर खिलाड़ी जाने का फैसला करता है तो सब कुछ बदल सकता है। ईशान किशन ने 2016 में आईपीएल डेब्यू किया था, जब से अब तक उन्होंने 119 मैच खेले हैं।

नीरज चोपड़ा को आर्मी से मिलती है लाखों में सैलरी, जानकर आपके भी उड़ जाएंगे होश

एजेंसी नई दिल्ली

ओलंपिक में गोल्ड मेडल जीतने वाले नीरज चोपड़ा को भारतीय सेना में लेफ्टिनेंट कर्नल का मानद पद दिया गया है। दिल्ली में हुए एक कार्यक्रम में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने उन्हें यह सम्मान दिया। यह सम्मान नीरज चोपड़ा की एथलेटिक्स में बेहतरीन कामयाबी और लाखों युवाओं को प्रेरित करने के लिए दिया गया है। वे उन गिने-चुने खिलाड़ियों में शामिल हो गए हैं, जिन्हें देश का नाम रोशन करने के लिए सेना में यह मानद रैंक दी गई है। यह पदोन्नति 16 अप्रैल से लागू हुई है। नीरज चोपड़ा 26 अगस्त 2016 को भारतीय सेना में नायब सूबेदार के तौर पर जूनियर कमीशंड अधिकारी बने थे। अपने शानदार खेल प्रदर्शन के लिए उन्हें दो साल बाद अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया, और फिर 2021 में खेल रत्न मिला। 2021 में ही उन्हें सूबेदार के पद पर पदोन्नत किया गया था। टोक्यो 2020 ओलंपिक में ऐतिहासिक गोल्ड मेडल जीतने के बाद, 27 वर्षीय इस खिलाड़ी को 2022 में भारतीय सेना से परम विशिष्ट सेवा मेडल मिला। उसी साल उन्हें सूबेदार मेजर के पद पर प्रमोट किया गया और देश का चौथा सबसे बड़ा नागरिक सम्मान पद्म श्री भी मिला। हालांकि, हाल ही में हुई विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप में नीरज चोपड़ा अपने विश्व खिताब का बचाव नहीं कर पाए। वह 84.03 मीटर के अपने सबसे अच्छे थ्रो के साथ आठवें स्थान पर रहे। यह 26 प्रतियोगिताओं में लगातार शीर्ष दो में रहने का उनका रिकॉर्ड तोड़ गया। उनके साथी भारतीय एथलीट सचिन यादव ने उनसे बेहतर प्रदर्शन करते हुए चौथा स्थान हासिल किया, लेकिन 86.27 मीटर के सर्वश्रेष्ठ थ्रो के बावजूद वह मेडल से चूक गए।आठवें स्थान पर आने के बाद नीरज चोपड़ा ने अपने इस प्रदर्शन पर हैरानी जताई। उन्होंने बताया कि उन्हें थोड़ी पीठ की समस्या थी, लेकिन उन्होंने इसे "यह जीवन और खेल है" कहकर स्वीकार किया। 2021 में कोर्टेन गेम्स से शुरू हुआ नीरज का लगातार 26 बार शीर्ष-दो में रहने का सिलसिला, जो टोक्यो 2020 में ऐतिहासिक गोल्ड जीतने से ठीक पहले का था, इस बड़ी प्रतियोगिता में आठवें स्थान पर आकर खत्म हो गया। इससे पहले, यह भारतीय स्टार आखिरी बार 2018 में चेक गणराज्य के कॉन्टिनेंटल कप में छठे स्थान पर रहे थे, जब वे टॉप तीन में नहीं आ पाए थे। 2024 तक, नीरज चोपड़ा की कुल संपत्ति लगभग 37 करोड़ रुपये थी। उनकी आय के मुख्य स्रोत इंटरनेशनल जैवलिन थ्रो इवेंट से मिली पुरस्कार राशि, एंडोर्समेंट (विज्ञापनों) और भारतीय सेना में जूनियर कमीशंड अधिकारी के रूप में उनका पद है। हालांकि, सेना में उच्च पद पर पदोन्नत होने के बाद, उनका वेतन भी बढ़ गया है।

जसप्रीत बुमराह की टेस्ट रैंकिंग खतरे में, नंबर 1 के करीब पहुंचा ये पाकिस्तानी गेंदबाजी, सिर्फ एक मैच ने पलट दी बाजी

एजेंसी नई दिल्ली

भारत के स्टार तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह आईसीसी मेंस टेस्ट गेंदबाजों की रैंकिंग में टॉप पर बने हुए हैं। हालांकि, ताजा अपडेट के बाद कुछ भारतीय खिलाड़ियों की रैंकिंग में बदलाव जरूर देखने को मिला है। मोहम्मद सिराज वनडे फॉर्मेट में गेंदबाजों की रैंकिंग में 17वें पायदान पर हैं। इस लिस्ट में अफगानी स्पिनर राशिद खान शीर्ष पर बने हुए हैं। इस बीच, टेस्ट रैंकिंग में शीर्ष पर मौजूद बुमराह की बढ़त कम हो गई है। अब पाकिस्तान के नौमान अली उनसे सिर्फ 29 अंक पीछे हैं, जिन्होंने लाहौर में अपने शानदार प्रदर्शन के बाद करियर की नई सर्वोच्च रेटिंग हासिल की है। नौमान अली चार पायदान की उछाल के साथ दूसरे पायदान पर पहुंच गए हैं। साउथ अफ्रीका के खिलाफ पाकिस्तान की 93 रनों की जीत में नौमान ने 10 विकेट हासिल किए थे। उनके साथी शाहीन अफरीदी भी उसी टेस्ट की दूसरी पारी में चार विकेट लेने के बाद तीन पायदान ऊपर चढ़कर 19वें स्थान पर पहुंच गए हैं। पाकिस्तानी बल्लेबाजों में मोहम्मद रिजवान चार पायदान ऊपर चढ़कर 16वें स्थान पर पहुंच गए हैं, जबकि बाबर आजम दो पायदान ऊपर चढ़कर 22वें स्थान पर पहुंच गए हैं। इस बीच सलमान आगा 8 पायदान ऊपर चढ़कर 30वें स्थान पर पहुंच गए। टेस्ट बल्लेबाजी रैंकिंग में इंग्लैंड के जो रूट शीर्ष पर बने हुए हैं। साउथ अफ्रीकी खेमे में रयान रिकेल्टन ने पाकिस्तान के खिलाफ पहले टेस्ट की पहली पारी में 71 रन बनाकर पहली बार शीर्ष 50 में जगह बनाई है, जबकि टोनी डी जोरजी के शतक ने उन्हें 54वें स्थान पर पहुंचा दिया है। पर्थ में ऑस्ट्रेलिया के कार्यवाहक कप्तान मिशेल मार्श भारत के खिलाफ प्लेयर ऑफ द मैच के प्रदर्शन के बाद वनडे बल्लेबाजी रैंकिंग में दो पायदान ऊपर चढ़कर 42वें स्थान पर पहुंच गए हैं। ऑस्ट्रेलियाई तेज गेंदबाज जोश हेजलवुड और मिशेल स्टार्क भी वनडे गेंदबाजों की रैंकिंग में क्रमशः 10वें और 21वें स्थान पर पहुंच गए हैं। बांग्लादेश के स्पिनर मेहदी हसन मिराज वेस्टइंडीज के खिलाफ लगातार अच्छे प्रदर्शन के बाद 6 पायदान चढ़कर 18वें स्थान पर पहुंच गए हैं।

व्यापार

चीन की यह भूख बढ़ा रही भारत की टेंशन, इस होड़ के पीछे प्लान क्या है

एजेंसी नई दिल्ली

साल 2025 में सोने की कीमतें रिकॉर्ड तोड़ रही हैं। विश्लेषकों का मानना है कि यह तेजी अभी और बढ़ेगी। इस साल पहले ही सोना 50% से ज्यादा बढ़ चुका है। इससे यह लंदन में 4,000 डॉलर प्रति औंस के पार चला गया है। इसके पीछे कई वजहें हैं। बढ़ती भू-राजनीतिक चिंताएं, अमेरिका में लंबा सरकारी शटडाउन और डॉलर में निवेशकों का घटता भरोसा। चीन का केंद्रीय बैंक पीपुल्स बैंक ऑफ चाइना (PBoC) लगातार 11 महीनों से सोना खरीद रहा है। यह दिखाता है कि चीन अमेरिकी डॉलर पर अपनी निर्भरता कम करना चाहता है। सितंबर में ही पीबीओसी ने 40,000 औंस सोना खरीदा। इससे उसका कुल सोने का भंडार 7.40 करोड़ औंस हो गया। इसकी कीमत 283.3 अरब डॉलर है। हालांकि, चीन की यह भूख भारत की टेंशन बढ़ा सकती है। भारत दुनिया में सोने के सबसे बड़े उपभोक्ताओं में से एक है। अपनी ज्यादातर मांग को पूरा करने के लिए वह आयात पर निर्भर है। सोने की कीमतें बढ़ने पर भारत को उतना ही सोना खरीदने के लिए ज्यादा डॉलर खर्च करने पड़ेंगे। इससे भारत का कुल आयात बिल बढ़ जाएगा। चीन की सोना खरीदने की होड़ अभी थमती भी नहीं दिख रही है। भारत के ऊंचे आयात बिल से व्यापार घाटा बढ़ सकता है। इससे रुपया डॉलर के मुकाबले और कमजोर हो सकता है। अपोलो ग्लोबल मैनेजमेंट के चीफ इकोनॉमिस्ट टोरस्टेन स्लोक के अनुसार, चीन सोने की इस ऐतिहासिक तेजी का सबसे बड़ा फैक्टर बनकर उभरा है। उन्होंने अपने एक लेख में बताया कि चीन का असर सिर्फ केंद्रीय बैंक की खरीद तक सीमित नहीं है। यह आम लोगों की सोने की खरीदारी, आर्बिट्रेज ट्रेडिंग (कीमतों के अंतर से मुनाफा कमाना) और संस्थागत निवेशकों की ओर से सोने में निवेश तक फैला हुआ है। वेल्थ और स्टॉक विश्लेषक अक मंधान का कहना है कि चीन का लगातार सोना खरीदना छोटी अवधि की योजना नहीं है। यह एक सोची-समझी लंबी अवधि की रणनीति है। उन्होंने कहा, 'अगले दो सालों में सोना 1,77,000 रुपये प्रति तोला तक पहुंच जाएगा। यही वजह है कि चीन सोने की रिकॉर्ड तोड़ तेजी के बाद भी खरीद रहा है।' मंधान ने समझाया कि चीन की यह लगातार खरीद अमेरिकी संपत्तियों से हटकर सोने जैसी 'वास्तविक' मूल्यवान संपत्तियों की ओर बड़े बदलाव को दर्शाती है। खासकर तब जब वैश्विक आर्थिक अनिश्चितता का माहौल बना हुआ है। बड़े निवेश बैंक भी इस उम्मीद को साझा करते हैं। गोल्डमैन सैक्स ने दिसंबर 2026 के लिए सोने का अपना अनुमान बढ़ाकर 4,900 अमेरिकी डॉलर प्रति औंस कर दिया है। वहीं, अरबपति निवेशक रे डालियो और केन ग्रिफिन ने वित्तीय अस्थिरता और वैश्वीकरण के कम होने के इस दौर में सोने को 'सबसे अच्छा बचाव' बताया है।

सोना भरभराया, चांदी की उड़ी चमक... यही है खरीदने का सही समय

एजेंसी नई दिल्ली

सोने और चांदी की कीमतों में तेज गिरावट आई है। विदेशी बाजारों में नरमी के बीच 17 अक्टूबर से सोना 6,967 रुपये लुढ़क चुका है। बुधवार को यह 1,23,907 रुपये प्रति 10 ग्राम पर पहुंच गया। इसी अवधि में चांदी में 18,774 रुपये की गिरावट आई है। यह 1,52,501 रुपये प्रति किलो बोली गई। इंडियन बुलियन ज्वैलर्स एसोसिएशन (आईबीजेए) के आंकड़ों से इसका पता चलता है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी सोने की कीमतों में बुधवार को गिरावट जारी रही। पिछले दिन पांच साल में सबसे बड़ी एकदिनी बिकवाली के बाद ऐसा हुआ। मंगलवार को सोना 5% से ज्यादा लुढ़का था जो अगस्त 2020 के बाद सबसे तेज गिरावट थी। आज स्पॉट गोल्ड 0.4% टूटकर 4,109.19 डॉलर प्रति औंस पर आ गया। यह सोमवार को अपने सबसे ऊंचे स्तर 4,381.21 डॉलर से 6% से ज्यादा की गिरावट है। सिर्फ 5 दिनों में (17 अक्टूबर से 22 अक्टूबर) सोने की कीमतें लगभग 7,000 रुपये प्रति यूनिट तक गिर चुकी हैं। यह दर्शाता है कि वैश्विक और घरेलू बाजार में सोने के प्रति निवेशकों का आकर्षण कम हुआ है। साथ ही ऊंचे स्तरों पर बड़ी मुनाफावसूली हुई है। चांदी की कीमतों में गिरावट सोने की तुलना में कहीं ज्यादा है। 17 अक्टूबर से 22 अक्टूबर के बीच चांदी (999) 171275 रुपये से घटकर 152501 रुपये पर आ गई है। यह 18,774 रुपये की बहुत बड़ी गिरावट है।

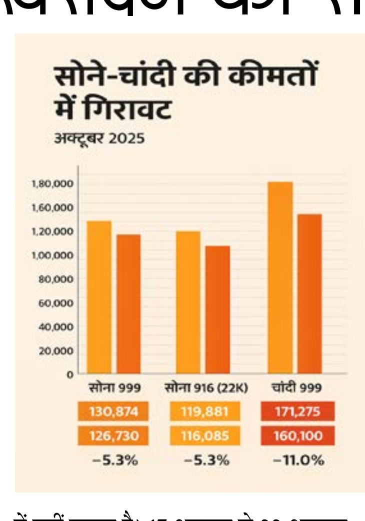

घरेलू सोने का बाजार दिवाली के अवकाश के कारण पिछले सत्र में बंद था। हालांकि, आज शाम के सत्र में जब बुलियन ट्रेडिंग के लिए खुला तो इसमें तेज बिकवाली देखने को मिली। दिवाली बलिप्रतिपदा के कारण सुबह के कारोबार में एमसीएक्स बंद था। घरेलू बाजार में 132,294 रुपये प्रति 10 ग्राम के अपने रिकॉर्ड शिखर से सोने की कीमतों में नरमी आई है। यह 1,23,907 रुपये पर आ गया है। सोने की कीमतों में यह ताजा बिकवाली निवेशकों की ओर से मुनाफावसूली के कारण हुई है। कारण है कि बुलियन बाजार में रिकॉर्ड तेजी देखी गई थी इस साल सोने की कीमतों ने लगभग 60% रिटर्न दिया है। यह ज्यादातर एसेट क्लास से बेहतर प्रदर्शन कर रहा है। इसके अलावा अमेरिका-चीन व्यापार संबंधों में सुधार के संकेत और भारत और अमेरिका के बीच व्यापार वार्ता के सकारात्मक परिणाम की संभावना ने भी जोखिम-मुक्त भावना को बढ़ावा दिया है। इससे सोने की कीमतों में गिरावट आई है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि उन्हें अगले सप्ताह दक्षिण कोरिया में चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग से मिलने पर उचित व्यापार सौदा होने की उम्मीद है। इसके अलावा, नई दिल्ली और वाशिंगटन एक लंबे समय से अटके व्यापार समझौते के करीब पहुंच रहे हैं। इससे भारतीय सामानों पर अमेरिकी टैरिफ 50% से घटकर 15% से 16% हो जाएगा। निवेशक अब सितंबर के अमेरिकी उपभोक्ता मूल्य सूचकांक रिपोर्ट के जारी होने का इंतजार कर रहे हैं। कारण है कि यह फेडरल रिजर्व की ब्याज दर के दृष्टिकोण पर प्रकाश डाल सकता है।

विदेशी निवेश में भारी गिरावट, इस फाइनेंशियल ईयर में पहली बार निगेटिव हुआ नेट FDI

एजेंसी नई दिल्ली

भारत में विदेशी निवेश (FDI) में अगस्त में गिरावट देखी गई। जुलाई में यह चार साल के सबसे ऊंचे स्तर $11.11 बिलियन पर था लेकिन अगस्त में घटकर $6 बिलियन रह गया। इसके साथ ही विदेशी कंपनियों ने जुलाई की तुलना में अगस्त में पैसे स्वदेश भेजने में 30% की बढ़ोतरी की और यह आंकड़ा $4.9 बिलियन तक पहुंच गया। इस वजह से इस वित्त वर्ष में पहली बार अगस्त में नेट एफडीआई निगेटिव हो गया। RBI की रिपोर्ट के अनुसार जुलाई में जहां $5 बिलियन का एफडीआई आया था, वहीं अगस्त में $616 मिलियन का आउटफ्लो हुआ। अप्रैल से जुलाई 2025 के बीच सिंगापुर, अमेरिका, मॉरीशस, यूएई और नीदरलैंड्स एफडीआई के सबसे बड़े स्रोत रहे। इन देशों से आए कुल निवेश का 76% हिस्सा इन्हीं से था। इक्विटी एफडीआई का 74% से ज्यादा हिस्सा मैन्युफैक्चरिंग, कंप्यूटर सर्विसेज, बिजनेस सर्विसेज, कम्युनिकेशन सर्विसेज और बिजली उत्पादन और वितरण जैसे क्षेत्रों में गया। भारत ने बीते सितंबर के दौरान $4.41 billion का किया विदेशों में निवेश, कहां लगा रहे हैं पैसा? रुपये को स्थिर रखने के लिए आरबीआई ने विदेशी मुद्रा बाजार में हस्तक्षेप बढ़ाया। अगस्त में आरबीआई ने $7.7 बिलियन की शुद्ध बिक्री की जबकि जुलाई में यह आंकड़ा $2.5 बिलियन था। अगस्त के अंत में अमेरिकी टैरिफ को लेकर अनिश्चितताओं के बीच रुपया पहली बार 88 प्रति डॉलर के पार चला गया था। ईटी की रिपोर्ट के अनुसार रियल इफेक्टिव एक्सचेंज रेट (REER) सितंबर में 95.84 पर था। लिबरलाइज्ड रेमिटेंस स्कीम (LRS) के तहत विदेश भेजे जाने वाले पैसे लगातार दूसरे महीने बढ़े। अगस्त में यह आंकड़ा $2.6 बिलियन तक पहुंच गया, जो जुलाई से 7.7% ज्यादा है। इसमें सबसे बड़ा हिस्सा ट्रेवल एक्सपेंडीचर का रहा, जो $1.6 बिलियन हो गया। वहीं विदेश में शिक्षा पर होने वाला खर्च 39% बढ़कर $319 मिलियन हो गया। प्रॉपर्टी, शेयर बाजार और कर्ज में निवेश और तोहफे के तौर पर भेजे जाने वाले पैसे जुलाई की तुलना में कम हुए। एलआरएस के तहत भारतीय निवासी हर साल स्वीकृत लेन-देन के लिए $250,000 तक विदेश भेज सकते हैं।

भाई-बहन को समर्पित अनूठा, ऐतिहासिक एवं संवेदनात्मक त्यौहार

भ्रातृ द्वितीया (भाई दूज) कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को मनाया जाने वाला हिन्दू धर्म का एक महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक पर्व है जिसे यम द्वितीया भी कहते हैं। यह दीपावली के दो दिन बाद आने वाला ऐसा पर्व है, जो भाई के प्रति बहन के स्नेह को अभिव्यक्त करता है एवं बहनें अपने भाई की खुशहाली के लिए कामना करती हैं। आज जबकि समाज रिश्तों की गर्माहट से दूर होता जा रहा है, जब व्यक्तिगत स्वार्थों और भौतिक लिप्साओं ने मानवीय संबंधों को हाशिये पर पहुँचा दिया है, तब भाई दूज का पर्व हमें रिश्तों की आत्मीयता, समर्पण और सुरक्षा के शाश्वत मूल्यों की याद दिलाता है। यह पर्व केवल एक पारंपरिक रिवाज नहीं है, बल्कि भारतीय संस्कृति की उस भावना का प्रतीक है, जहाँ भाई और बहन का संबंध केवल रक्त का रिश्ता नहीं, बल्कि आत्मीयता, श्रद्धा और अटूट विश्वास का जीवंत स्वरूप है। इसदिन भाई का बहन के घर भोजन करने का विशेष महत्व एवं लाभ है, उसे उत्तम भोजन समेत धन, सुख एवं खुशहाल जीवन की प्राप्ति भी होती रहती है। क्योंकि इसी तिथि को यमुना ने यम को अपने घर भोजन कराया था। कोई बहन नहीं चाहती कि उसका भाई दीन-हीन एवं तुच्छ हो, सामान्य जीवन जीने वाला हो, ज्ञानरहित, प्रभावरहित हो। हिन्दू धर्म एवं परम्परा में पारिवारिक सुदृढ़ता, सांस्कृतिक मूल्य एवं आपसी सौहार्द के लिये त्यौहारों का विशेष महत्व है। इस त्यौहार को मनाने के पीछे की ऐतिहासिक कथा भी निराली है। पौराणिक आख्यान के अनुसार भगवान सूर्य नारायण की पत्नी का नाम छाया था। उनकी कोख से यमराज तथा यमुना का जन्म हुआ था। यमुना यमराज से बड़ा स्नेह करती थी। यमुना ने अपने भाई यमराज को आमंत्रित किया कि वह उसके घर आकर भोजन ग्रहण करें, किन्तु व्यस्तता के कारण यमराज उनका आग्रह टाल जाते थे। यमराज ने सोचा कि मैं तो प्राणों को हरने वाला हूं। मुझे कोई भी अपने घर नहीं बुलाना चाहता। बहन जिस सद्भावना से मुझे बुला रही है, उसकी इच्छा को पूरा करना मेरा धर्म है। बहन के घर आते समय यमराज ने नरक निवास करने वाले जीवों को मुक्त कर दिया। यमराज को अपने घर आया देखकर यमुना की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उसने स्नान कर पूजन करके व्यंजन परोसकर उत्तम भोजन कराया। यमुना द्वारा किए गए आतिथ्य से यमराज ने प्रसन्न होकर बहन को वर दिया कि जो भी इस दिन यमुना में स्नान करके बहन के घर जाकर श्रद्धापूर्वक उसका सत्कार ग्रहण करेगा उसे व उसकी बहन को यम का भय नहीं होगा। तभी से लोक में यह पर्व यम द्वितीया के नाम से प्रसिद्ध हो गया। भाइयों को बहनों टीका लगाती है, इस कारण इसे भातृ द्वितीया या भाई दूज भी कहते

हैं। यह पर्व केवल यम और यमुनाजी की कथा तक सीमित नहीं है। भैया दूज भारत में कई जगह अलग-अलग नामों के साथ मनाई जाती है। बिहार में भिन्न रूप में मनाया जाता है, जहां बहनें भाईयों को खूब कोसती हैं फिर अपनी जबान पर कांटा चुभाती हैं और क्षमा मांगती हैं। भाई अपनी बहन को आशीष देते हैं और उनके मंगल के लिए प्रार्थना करते हैं। गुजरात में यह भाई बीज के रूप में तिलक और आरती की पारंपरिक रस्म के साथ मनाया जाता है। महाराष्ट्र और गोवा के मराठी भाषी समुदाय के लोग भी इसे भाई बीज के तौर पर मनाते हैं। यहां बहने फर्श पर एक चौकोर आकार बनाती हैं, जिसमें भाई करीथ नाम का कड़वा फल खाने के बाद बैठता है। आज जब रिश्ते औपचारिकता बनते जा रहे हैं, भाई दूज हमें यह स्मरण कराता है कि सगे संबंधों को जीवित और प्रगाढ़ बनाए रखने के लिए केवल व्हाट्सएप संदेश या उपहार काफी नहीं होते, बल्कि आत्मीय मिलन, संवाद और सम्मान जरूरी है। इस पूजा में भाई की हथेली पर बहनें चावल का घोल लगाती हैं। उसके ऊपर सिन्दूर लगाकर कद्दू के फूल, पान, सुपारी मुद्रा आदि हाथों पर रखकर धीरे-धीरे पानी हाथों पर छोड़ते हुए मंत्र बोलती हैं कि 'गंगा पूजे यमुना को यमी पूजे यमराज को, सुभद्रा पूजा कृष्ण को, गंगा यमुना नीर बहे, मेरे भाई की आयु बढ़े'। एक और मंत्र है- 'सांप काटे, बाघ काटे, बिच्छू काटे जो काटे सो आज काटे' इस तरह के मंत्र इसलिए कहे जाते हैं क्योंकि ऐसी मान्यता है कि आज के दिन अगर भयंकर पशु भी काट ले तो यमराज भाई के प्राण नहीं ले जाएंगे। संध्या के समय बहनें यमराज के नाम से चौमुख दीया जलाकर घर के बाहर रखती हैं। इस दिन एक विशेष समुदाय की औरतें अपने आराध्य देव चित्रगुप्त की पूजा करती है। स्वर्ग में धर्मराज का लेखा-जोखा रखने वाले चित्रगुप्त का पूजन सामूहिक रूप से तस्वीरों अथवा मूर्तियों के माध्यम किया जाता हैं। वे इस दिन कारोबारी बहीखातों की पूजा भी करते हैं। यदि कोई बहन न हो तो गाय, नदी आदि स्त्रीत्व का ध्यान करके अथवा उसके समीप बैठ कर भोजन कर लेना भी शुभ माना जाता है। भाई दूज रक्षाबंधन से इस मायने में भिन्न है कि जहाँ राखी में बहन रक्षा की कामना करती है, वहीं भाई दूज में वह अपने घर बुलाकर भाई की सेवा करती है और उसे भोजन कराती है। यह सेवा-संस्कृति भारतीय परिवार व्यवस्था की आत्मा रही है। यह उस अहं को तोड़ता है जो अक्सर पुरुष प्रधान मानसिकता से जन्म लेता है। यह उस संबंध को पुनः प्रतिष्ठित करता है जो केवल रक्षात्मक नहीं, बल्कि संवेदनात्मक और परस्पर समर्पित है। भैया दूज के बारे में प्रचलित कथाएं सोचने पर विवश कर देती हैं कि कितने महान उसूलों और मानवीय संवेदनाओं वाले थे वे लोग, जिनकी देखादेखी एक संपूर्ण परंपरा ने जन्म ले लिया और आज तक बदस्तूर जारी है। आज परंपरा भले ही चली आ रही है लेकिन उसमें भावना और प्यार की वह गहराई नहीं दिखायी देती। अब भैया दूज में भाई-बहन के प्यार का वह ज्वार नहीं दिखायी देता जो शायद कभी रहा होगा। इसलिए आज बहुत जरूरत है दायित्वों से बंधे भैया दूज पर्व का सम्मान करने की। भाईदूज की परम्परा बताती हैं कि पहले खतरों के बीच फंसे भाई की पुकार बहन तक पहुंचती तो बहन हर तरह से भाई की सुरक्षा के लिये तत्पर हो जाती। आज घर-घर में ही नहीं बल्कि सीमा पर भाई अपनी जान को खतरे में डालकर देश की रक्षा कर रहे हैं, उन भाइयों की सलामती के लिये बहनों को प्रार्थना करनी चाहिए तभी भैया दूज का यह पर्व सार्थक बन पड़ेगा और भाई-बहन का प्यार शाश्वत एवं व्यापक बन पायेगा। भाईदूज की परंपरा उन परिवारों में भी संबंधों को फिर से जोड़ने का अवसर देती है जहाँ समय, दूरी या विचारों के मतभेद से भाई-बहन के रिश्ते कमजोर पड़ गए हैं। भोजन केवल स्वाद या अनुष्ठान नहीं है, बल्कि एक ऐसा माध्यम है जो भाई-बहन के बीच संवाद को फिर से शुरू करता है, पुराने किस्सों की स्मृति को ताजा करता है, और दिलों को जोड़ता है। आज की पीढ़ी को यह समझने की जरूरत है कि पर्व केवल कैलेंडर की तारीखें नहीं हैं, बल्कि वे भारतीय समाज की आत्मा हैं, जो रिश्तों को अर्थ देती हैं, संबंधों में संवाद पैदा करती हैं और संस्कृति को पीढ़ियों तक जीवित रखती हैं। भैया दूज यानी भाई-बहन के प्यार का पर्व। एक ऐसा पर्व जो घर-घर मानवीय रिश्तों में नवीन ऊर्जा का संचार करता है। भाई दूज केवल रस्म नहीं, रिश्तों का पुनर्जन्म है। आज जब समाज टूटन, तनाव और अलगाव से गुजर रहा है, भाई दूज जैसे पर्व रिश्तों के लिए एक सेतु बन सकते हैं- जो न केवल एक दिन का उत्सव हों, बल्कि जीवनभर के लिए संबंधों में स्थायित्व, मिठास और सुरक्षा भर दें।

भाई दूज पर तिलक लगाने का शुभ मुहूर्त और संपूर्ण पूजा

हर साल कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को भाई दूज का त्योहार मनाया जाता है। यह पर्व भाई-बहनों को समर्पित होता है। इस बार भाई दूज 23 अक्टूबर, गुरुवार के दिन मनाया जाएगा। इसी के साथ पंचदिवसीय त्योहार दिवाली का समापन भी हो जाएगा। भाई दूज के दिन बहनें अपने भाइयों को रोली और अक्षत लगाती हैं। साथ ही, उनकी लंबी उम्र व तरक्की की कामना करती हैं। शुभ मुहूर्त में भाई दूज की पूजा करने और तिलक लगाने का महत्व होता है। तो आइए विस्तार से जानें भाई दूज पर तिलक लगाने का शुभ मुहूर्त और पूजा विधि...इस साल कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि 23 अक्टूबर को रहेगी। बता दें कि 22 अक्टूबर, बुधवार के दिन कार्तिक शुक्ल द्वितीया तिथि का आरंभ रात में 8 बजकर 17 मिनट से होगा। वहीं, 23 अक्टूबर को रात 10 बजकर 47 पर इसका समापन होगा। क्योंकि उदया तिथि 23 अक्टूबर को है। ऐसे में इसी दिन भाई दूज का त्योहार मनाया जाएगा।

शुभ चौघड़िया मुहूर्त में भाई दूज मनाना सबसे शुभ माना जाता है। वहीं, अमृत चौघड़िया में भी भाई-बहन भाई दूज का पर्व मना सकते हैं।

शुभ चौघड़िया मुहूर्त : 12 बजकर 5 मिनट से लेकर 2 बजकर 54 मिनट तक

अमृत चौघड़िया मुहूर्त : 1 बजकर 30 मिनट से लेकर 2 बजकर 54 मिनट तक

शास्त्रों के अनुसार, शुभ चौघड़िया में दोपहर के वक्त भाई दूज मनाना सबसे उत्तम रहेगा। इसके अलावा, अमृत चौघड़िया में बहनों के हाथ से अन्न-जल लेना शुभ रहेगा। मान्यता है कि इससे अकाल मृत्यु का भय दूर होता है। साथ ही, भाई-बहन के रिश्ते मजबूत होते हैं।

सबसे पहले भाई को पूर्व दिशा की तरफ और बहन को पश्चिम दिशा की तरफ मुख करके बैठना चाहिए। इसके बाद, शुभ मुहूर्त में पूजा शुरू करें।

दोपहर में शुभ मुहूर्त भाई को एक आसन पर बिठाएं और उन्हें तिलक लगाएं। इस बात का ख्याल रखें कि छोटे भाई को अंगूठे से और बड़े भाई को अनामिका उंगली से दीपशिखा के प्रकार तिलक लगाना चाहिए।

इसके बाद, नारियल लेकर गोद में रखें और भाइयों को भोजन कराएं। तिलक लगाने और भोजन कराने के बाद भाइयों को अपनी बहनों को वस्त्र, उपहार देना चाहिए।

विधि-पूर्वक पूजा करने और तिलक लगाने से भाई की आयु और बल में वृद्धि होती है। साथ ही, जीवन में सुख-समृद्धि आती है।

छठ पर्व करते हैं तो भाई दूज के दिन भूलकर भी नहीं करें ये काम, छठी मैया हो जाती हैं नाराज

कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को भाई दूज का त्योहार मनाया जाता है। वहीं, कार्तिक मास के षष्ठी तिथि से छठ पर्व का आरंभ होता है। लेकिन कुछ ऐसी विशेष बाते हैं, जिनका ख्याल छठ पूजा करने वालों को भाई दूज यानी द्वितीया तिथि से ही रखना चाहिए। अगर आप छठ पूजा करते हैं या आपके परिवार में कोई महिला इस व्रत को करती है तो इस दिन भूलकर भी कुछ कार्य नहीं करने चाहिए। द्वितीया तिथि पर कुछ चीजें करना शुभ नहीं माना जाता है, इससे छठी मैया नाराज हो सकती हैं। तो आइए विस्तार से जानें की छठ करने वालों को भाई दूज पर क्या नहीं करना चाहिए। ऐसी मान्यता है कि कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को मृत्युदा तिथि कहा जाता है। इसमें कोई भी शुभ या पुण्य का कार्य करना वर्जित माना गया है। हालांकि, यह तिथि बुधवार के दिन पड़ने से इसे शुभदा माना जाता है। यानी शुभ फल देने वाली, लेकिन फिर भी द्वितीय तिथि पर कोई भी पुण्य या शुभ कार्य न करें। ऐसा करने से जातक को नुकसान उठाना पड़ सकता है। खासतौर पर छठ पर्व करने वालों को इस नियम का ख्याल रखना चाहिए। अगर आप छठ पर्व करते हैं या आपके घर में यह त्योहार मनाया जाता है तो द्वितीय तिथि के दिन एक बात का विशेष ध्यान जरूर रखें। छठ पूजा में गेहूं को लेकर प्राचीन मान्यता चली आ रही है। इससे प्रसाद तैयार किया जाता है। ऐसे में इसकी पवित्रता का विशेष ख्याल रखा जाता है। छठ मैया के व्रत में श्रद्धालुओं की आस्था है कि प्रसाद का गेहूं झूठा या गंदा न हो। उसे अच्छी तरह साफ करके प्रयोग किया जाता है। लेकिन इस कार्य को द्वितीय तिथि को भूलकर भी नहीं करना चाहिए। मान्यता है कि कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को छठ पर्व करने वालों को स्पर्श नहीं करना चाहिए, न उसकी महक लें और न उसे धोएं। यानी द्वितीय तिथि के दिन गेहूं से दूर रहना चाहिए। इस व्रत और त्योहार के लिए कई प्रकार की चीजों की आवश्यकता पड़ती है। ऐसे में लोग कुछ दिन पहले से ही छठ की खरीदारी में लग जाते हैं। लेकिन यह कार्य द्वितीय तिथि के दिन भूलकर भी न करें। मान्यता है कि भैया दूज पर छठ पूजा के प्रसाद की सामग्री नहीं खरीदनी चाहिए। क्योंकि इस दिन कोई भी शुभ कार्य करना वर्जित माना गया है। ऐसे में इस दिन छठ पर्व के लिए प्रसाद, फलों आदि की खरीदारी करने से बचना चाहिए। अन्यथा छठी मईया नाराज हो सकती हैं। इस साल छठ महापर्व 25 अक्टूबर, शनिवार को नहाय खाय के साथ शुरू होगा। ऐसे में अगर आपने सामग्री की लिस्ट बनानी शुरू कर दी है, तो इसकी खरीदारी द्वितीय तिथि के बाद करें। यानी आप छठ पूजा के लिए खरीदारी और उसकी तैयारी तृतीया तिथि से शुरू कर सकते हैं। इस दिन से आप गेहूं को धोना, सुखाना, प्रसाद की सामग्री खरीदना आदि कार्यों की शुरुआत कर सकते हैं।

आर्थिक राशिफल : भगवान विष्णु की कृपा से बन रहा धन योग, वृषभ सिंह समेत 5 राशियों के जातक पाएंगे तरक्की और लाभ

वृषभ राशि के जातको के लिए शुभ लाभदायक और लकी रहेगा। सितारे बताते हैं कि आपको कल के दिन नौकरी में अनुकूल स्थिति मिलने से प्रसन्नता होगी। अधिकारी और सहकर्मी दोनो से भी आप सहयोग प्राप्त कर पाएंगे। आपको कल के दिन बिजनेस में अपेक्षा से बढ़कर लाभ मिलेगा। जो लोग बैंक से लोन लेने के प्रयास कर रहे हैं उनको सफलता मिलेगी। प्रॉपर्टी से संबंधित काम में भी कल आपको भाग्य का पूरा सपोर्ट मिलेगा। आप कल राजनीतिक क्षेत्र में संपर्क का लाभ ले पाएंगे। परिवार के साथ आपका तालमेल अच्छा रहेगा। जीवनसाथी को आप कहीं घुमाने भी ले जा सकते हैं। सामाजिक संपर्क का आपको कल लाभ मिलेगा। वृषभ राशि के लिए कल कल गुरुवार के उपाय : आपको कल उपाय के तौर पर श्रीहरि स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। पीले चंदन का तिलक भी करना चाहिए।

सिंह राशि के जातको का मनोबल कल ऊंचा रहेगा। आपको भाग्य कल एक के बाद एक कई सफलता प्रदान कर सकता है। आप कल कोई नया काम शुरू कर सकते हैं और पुराने चल रहे काम में भी आपको कल लाभ मिलेगा। आपके सितारे बताते हैं कि आपको कल फैमिली बिजनेस में बड़ा लाभ मिल सकता है। कोई महत्वपूर्ण काम जो काफी समय से टलता जा रहा है वह भी पूरा हो सकता है। आपको कल ईश्वरीय कृपा की अनुभूति होगी। बीमार चल रहे जातको के स्वास्थ्य में सुधार होगा। आपको कहीं से कोई गिफ्ट या अचानक आर्थिक लाभ मिल सकता है। नौकरी की तलाश मे जुटे जातकों को कामयाबी मिल सकती है। आपको किसी काम में पूर्व ज्ञान का फायदा होगा और शिक्षा में प्रदर्शन से मन आनंदित होगा। सिंह राशि के लिए कल गुरुवार के उपाय : सिंह राशि के लोगों को कल के दिन उपाय के तौर पर गुड़ और चने की दाल का दान करना चाहिए।

तुला राशि के जातको को लिए कल गुरुवार का दिन शुभ लाभदायक रहेगा। कल आपके संपर्क का दायरा बढेगा। कुछ नए लोगों से आपकी जान पहचान हो सकती है जिससे आपको भविष्य में लाभ का संयोग बनेगा। नौकरी में कल आपका दिन अनुकूल बीतेगा। आपको अधिकारी वर्ग का सपोर्ट मिलेगा। किसी मित्र या सगे संबंधी से भी आपको कल सहयोग मिल सकता है। आपको भाग्य कल अप्रत्याशित लाभ दिला सकता है। तुला राशि के जातक किसी कोर्स में दाखिला लेने के लिए प्रयास कर रहे हैं तो कल के दिन कामयाबी मिल सकती है। आपको कल पिता और पैतृक धन संपत्ति का भी लाभ मिलेगा। कोई खोई हुई वस्तु मिल जाने से आपको प्रसन्नता होगी। जो जातक वस्त्र और शौक श्रृंगार की वस्तुओं का कारोबार करते हैं उनको कल विशेष लाभ मिलेगा। तुला राशि के लिए कल गुरुवार के उपाय : आपको कल उपाय के तौर पर आटे का दीपक बनाकर तुलसी को दीपक दिखाना चाहिए।

धनु राशि के लिए कल धन योग का संयोग लाभदायक रहेगा। आपको कल किसी अप्रत्याशित स्रोत से आर्थिक लाभ मिल सकता है। कोई प्रॉपर्टी संबंधी डील करने जा रहे हैं तो आपको कामयाबी मिलेगी। आप कल बिजनेस में लाभदायक सौदा मिलने की खुशी होगी। परिवार के साथ आपका कल सुखद समय बीतेगा। घर में किसी की शादी की बात चल रही है तो बात आगे बढेगी जिससे प्रसन्नता का माहौल बना रहेगा। आप कल किसी धार्मिक और सामाजिक काम में भाग लेकर नाम और यश हासिल कर सकते हैं। किसी पैसे उधार दिए हैं तो आपको अपना धन वापस मिल सकता है। कोई पुराना मित्र या संबंधी आज आप आपकी मदद कर सकता है। स्वास्थ्य भी सामान्य रूप से अच्छा रहेगा। धनु राशि के लिए कल गुरुवार के उपाय : आपको कल उपाय के तौर पर भगवान विष्णु की पूजा करनी चाहिए और विष्णु चालीसा का पाठ करना चाहिए।

मकर राशि के जातको के लिए शुभ लाभदायक रहेगा। आपको पूर्व में किए गए निवेश का लाभ मिलेगा। नौकरी की तलाश मे जुटे जातकों को कल कामयाबी मिल सकती है। आपके सितारे बताते हैं कि आपको कल सरकारी क्षेत्र के काम में भी सफलता मिलेगी। आप आर्थिक प्रयास में कल सफलता पाएंगे। नौकरी में आपके ऊपर काम का दबाव रहेगा लेकिन आप बेहतर प्रबंधन क्षमता से स्थिति को सामान्य बनाए रखने में सफल रहेगे। आपको कल कोई लाभ और तरक्की का भी मौका मिलेगा। वाहन सुख मिलने का भी योग बना हुआ है। जो लोग गाड़ी खरीदने के लिए प्रयास कर रहे हैं उनको कामयाबी मिलेगी। सामाजिक क्षेत्र में आपका प्रभाव और सम्मान मिलेगा। किसी सगे संबंधी से मिलने का भी संयोग बन सकता है। कार्य व्यापार के सिलसिले मे की गई यात्रा सफल रहेगी।

सूर्य नमस्कार से लेकर वज्रासन तक, ये आसान योगासन बनाएंगे आपकी सेहत

हम जिस तरह अपनी सुबह की शुरुआत करते हैं, वही दिशा तय करती है कि हमारा पूरा दिन कैसा बीतेगा। अगर सुबह नींद से उठते ही हम कुछ मिनट खुद के लिए निकाल लें, तो ये दिनभर के लिए हमारे शरीर और मन को एक नई ताकत दे सकता है। ऐसे में योग सिर्फ एक शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि एक ऐसी जीवनशैली बन सकता है जो हमारे शरीर को मजबूत, मन को शांत और सोच को सकारात्मक बनाता है। आयुष मंत्रालय भी बार-बार इस बात पर जोर देता है कि अगर हर इंसान दिन की शुरुआत योग से करे, तो बीमारियां कम होंगी और जीवन की गुणवत्ता बेहतर होगी। आयुष मंत्रालय के मुताबिक, अगर सुबह के 15-20 मिनट कुछ आसान योगासन कर लिए जाएं, तो ये ना केवल शरीर को लचीला और मजबूत बनाते हैं, बल्कि दिमाग को भी तरोताजा रखते हैं। सुबह-सुबह सूर्य नमस्कार करने का असर पूरे शरीर पर पड़ता है। इसमें 12 आसान स्टेप्स होते हैं, जो सिर से लेकर पांव तक हर हिस्से की हल्की कसरत कराते हैं। इस आसन में सांसों का तालमेल, शरीर का झुकाव और खिंचाव एक साथ होता है, जिससे शरीर में रक्त प्रवाह बढ़ता है और मांसपेशियों को ताकत मिलती है। जब आप इसे रोजाना

करते हैं, तो शरीर धीरे-धीरे लचीला बनता है और मेटाबॉलिज्म भी सुधरता है। ये उन लोगों के लिए और भी फायदेमंद है जो सुबह आलस्य महसूस करते हैं, क्योंकि सूर्य नमस्कार शरीर में ऊर्जा का संचार करता है। ताड़ासन एक ऐसा सरल आसन है जिसे बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक कोई भी कर सकता है। ये दिखने में जितना आसान है, उतना ही असरदार भी है। जब आप पंजों के बल खड़े होकर दोनों हाथों को ऊपर उठाते हैं और शरीर को खींचते हैं, तो आपकी रीढ़ की हड्डी सीधी होती है और शरीर का संतुलन बेहतर होता है। इस आसन से न केवल शरीर मजबूत बनता है, बल्कि आपकी पर्सनैलिटी भी खुलकर सामने आती है। लंबे समय तक करने से यह कद बढ़ाने में भी मददगार साबित हो सकता है, खासतौर पर बच्चों के लिए भुजंगासन उन लोगों के लिए वरदान है जिन्हें पीठ दर्द की शिकायत रहती है या जो दिनभर कंप्यूटर के सामने बैठे रहते हैं। जब आप पेट के बल लेटकर छाती को ऊपर उठाते हैं, तो आपकी रीढ़ की हड्डी में खिंचाव आता है और शरीर के ऊपरी हिस्से, खासकर पीठ, कंधे और छाती की मांसपेशियां एक्टिव होती हैं। ये आसन मानसिक तनाव को भी कम करता है और चेहरे पर ताजगी लाता है।

गोवर्धन पूजन पर बच्चों को गोबर में बैठाया

निरोगी रहने की मान्यता, डॉक्टर्स ने स्वास्थ्य के लिए जोखिम बताया

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

बैतूल में दीपावली के अगले दिन गोवर्धन पूजा पर एक अनोखी परंपरा निभाई जाती है। यहां श्रद्धालु अपने छोटे बच्चों को गोबर से बने गोवर्धन पर्वत में डालते हैं। यह मान्यता है कि ऐसा करने से बच्चे सालभर निरोगी रहते हैं। यह प्रथा कृष्णपुरा वार्ड सहित कई क्षेत्रों में वर्षों से जारी है। इस परंपरा के पीछे लोगों का विश्वास है कि जिस प्रकार भगवान कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत उठाकर ग्वालों की रक्षा की थी, उसी तरह गोवर्धन बच्चों को सुरक्षा और स्वास्थ्य का आशीर्वाद देते हैं। इसी आस्था के चलते माता-पिता स्वयं अपने बच्चों को गोबर में डालते हैं। यह परंपरा केवल ग्रामीण इलाकों तक सीमित नहीं है, बल्कि शहर के शिक्षित परिवार भी इसमें शामिल होते हैं। गोबर के बीच रोते-बिलखते बच्चों को देखकर कुछ लोग विचलित होते हैं, वहीं कई परिवार इसे श्रद्धा और शुभता का प्रतीक मानते हैं। समाजसेवी कैलाश यादव बताते हैं कि यह परंपरा भगवान इंद्र द्वारा ब्रज में की गई वर्षा से जुड़ी है, जब भगवान कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत उठाकर ग्वालों की रक्षा की थी। उनकी श्रद्धा है कि गोवर्धन आज भी बच्चों की रक्षा करते हैं और उन्होंने कभी कोई नुकसान नहीं देखा। स्थानीय निवासी ललित यादव का कहना है कि विज्ञान भले ही कुछ भी कहे, लेकिन उन्हें इस परंपरा से कभी कोई परेशानी नहीं हुई है। वे इसे अपने विश्वास और भगवान का आशीर्वाद मानते हैं।हालांकि, शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. नितिन देशमुख इस परंपरा को बच्चों के स्वास्थ्य के लिए बेहद खतरनाक बताते हैं। डॉ. देशमुख के अनुसार, गोबर में विभिन्न प्रकार के बैक्टीरिया और कीटाणु मौजूद होते हैं। इनके संपर्क में आने से बच्चों को त्वचा रोग, श्वसन संक्रमण और एलर्जी जैसी गंभीर बीमारियां होने का खतरा रहता है। यह बच्चों के स्वास्थ्य के लिए जोखिम भरा हो सकता है। आस्था और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के बीच झूलती यह परंपरा हर साल गोवर्धन पूजा के साथ दोहराई जाती है। जहां एक ओर लोग अपनी धार्मिक मान्यताओं के चलते बच्चों को गोबर में डालते हैं, वहीं दूसरी ओर विशेषज्ञ इसे अवैज्ञानिक और हानिकारक मानते हैं।

पत्रकार से विवाद के बाद कोतवाली टीआई का तबादला, सत्यप्रकाश सक्सेना हटाए गए

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

पुलिस अधीक्षक वीरेंद्र जैन ने बुधवार को पुलिस अधिकारियों की पदस्थापना में बदलाव के आदेश जारी किए हैं। इस फेरबदल में कोतवाली थाना प्रभारी निरीक्षक सत्यप्रकाश सक्सेना को उनके पद से हटा दिया गया है। यह तबादला हाल ही में एक पत्रकार के साथ हुए विवाद के बाद किया गया है। सत्यप्रकाश सक्सेना की जगह अब थाना गंज प्रभारी निरीक्षक नीरज पाल को कोतवाली का नया थाना प्रभारी बनाया गया है। वहीं, गंज थाने का स्वतंत्र प्रभार प्रशिक्षु उप पुलिस अधीक्षक (डीएसपी) शैफा हाशमी को सौंपा गया है। जानकारी के अनुसार, सत्यप्रकाश सक्सेना का तबादला एक स्थानीय पत्रकार द्वारा उनके खिलाफ थाने में अभद्र व्यवहार का आरोप लगाए जाने के बाद हुआ है। इस घटना के बाद पत्रकारों ने अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कमला जोशी को ज्ञापन सौंपकर कार्रवाई की मांग की थी। सत्यप्रकाश सक्सेना को कुछ समय पहले ही थाना आमला से स्थानांतरित कर कोतवाली प्रभारी बनाया गया था। अब उन्हें रक्षित केंद्र बैतूल में पदस्थ किया गया है। पुलिस अधीक्षक कार्यालय से जारी आदेश में सभी संबंधित अधिकारियों को तत्काल प्रभाव से नवीन पदस्थापना पर कार्यभार ग्रहण करने के निर्देश दिए गए हैं। प्रशिक्षु डीएसपी शैफा हाशमी मध्यप्रदेश पुलिस अकादमी भोपाल के 43वें बैच की अधिकारी हैं। उन्हें 16 जुलाई 2025 से 23 फरवरी 2026 तक बैतूल जिले में व्यवहारिक प्रशिक्षण के लिए भेजा गया है।

कंपनी डायरेक्टर 30 लाख गबन के आरोप से बरी, 10 साल पुराने मामले में अभियोजन 66 गवाह के बावजूद असफल

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

बैतूल के आमला में एडीजे कोर्ट ने आर.बी.एन. इंफ्रास्ट्रक्चर इंडिया प्राइवेट लिमिटेड कंपनी के डायरेक्टर रामनिवास को 30 लाख रुपए के गबन के आरोप से बरी कर दिया है। अभियोजन पक्ष आरोपी के खिलाफ अपराध साबित करने में असफल रहा। यह मामला लगभग 10 साल पुराना है। कंपनी ने 25 सितंबर 2010 से 30 अक्टूबर 2015 के बीच छोटे व्यापारियों और निवेशकों से धनराशि जमा की थी। बाद में कंपनी ने अचानक अपना कार्यालय बंद कर दिया और फरार हो गई। इस संबंध में श्याम कुमार पाटोदिया ने 25 जुलाई 2017 को आमला थाने में शिकायत दर्ज कराई थी। उन्होंने आरोप लगाया था कि कंपनी के डायरेक्टर रामनिवास और अन्य निदेशकों ने लगभग 30 लाख रुपए का गबन किया और निवेशकों के साथ धोखाधड़ी की। कंपनी स्वयं को लाइफ इंश्योरेंस कंपनी की कॉर्पोरेट एजेंट बताती थी। यह पॉलिसी बॉन्ड बेचने और रियल एस्टेट में निवेश कराने का काम करती थी। शिकायतकर्ता पाटोदिया भी कंपनी में एक निवेशक थे। मामला मध्यप्रदेश निक्षेपकों के हितों का संरक्षण अधिनियम 2000 के तहत भी दर्ज किया गया था। विवेचना अधिकारी विजय राव माहोरे ने जांच के दौरान सेबी और कॉर्पोरेट मंत्रालय से कंपनी की जानकारी मांगी थी। विवेचना में कुल 66 गवाह और 85 दस्तावेज पेश किए गए।

मुलताई के चार मंदिरों में अन्नकूट उत्सव, भगवान को अर्पित किए 56 भोग, भक्तों की उमड़ी भीड़

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

मुलताई में गोवर्धन पूजा के अगले दिन गुरुवार को चार प्रमुख मंदिरों में अन्नकूट उत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर भगवान को 56 भोग अर्पित किए गए, जिसे ग्रहण करने के लिए भक्तों की भारी भीड़ उमड़ पड़ी। नगर के लक्ष्मी नारायण मंदिर, सत्यनारायण मंदिर, जगदीश मंदिर और हनुमान मंदिर में सुबह से ही श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा। दिनभर मंदिरों में भक्ति, प्रसाद और आरती का वातावरण बना रहा।
अन्नकूट उत्सव के दौरान भगवान को 56 प्रकार के व्यंजन अर्पित किए गए। इनमें मिठाइयों, नमकीन, फलों, पकवानों और विभिन्न सब्जियों का समावेश था। बरबटी, गन्ने और बैंगन जैसी पारंपरिक सब्जियों के साथ लोगों ने नए मौसम की सब्जियां खाना शुरू किया। इस महोत्सव के आयोजन में नगर के अग्रवाल समाज,भार्गव, खंडेलवाल समाज और ब्राह्मण समाज ने सक्रिय भूमिका निभाई। सभी समाजों के सदस्यों ने मिलकर मंदिरों को रंग-बिरंगी सजावट, फूलों और दीपों से सजाया।
सामूहिक आरती का आयोजन किया गया, जिसके बाद सैकड़ों श्रद्धालुओं में प्रसाद वितरित किया गया। इस अवसर पर मंदिरों के प्रांगण में भक्ति और उल्लास का माहौल बना रहा। पंडित राहुल शर्मा ने बताया कि 'अन्नकूट' शब्द का अर्थ अन्न का समूह है। इस दिन विभिन्न प्रकार के अन्न और व्यंजन भगवान को अर्पित किए जाते हैं, जो हमें अन्न और प्रकृति के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का अवसर देता है। मुलताई में अन्नकूट महोत्सव मनाने की यह परंपरा वर्षों पुरानी है। दीपावली और गोवर्धन पूजा के बाद आने वाला यह दिन नगर के मंदिरों में विशेष उत्सव के रूप में मनाया जाता है। दिनभर भजन, कीर्तन और आरती के साथ भक्तों ने भगवान श्रीकृष्ण को नमन किया।

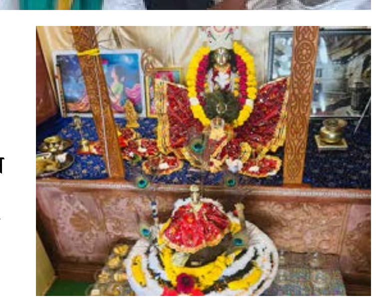

खेल मैदान पर खिलाड़ियों ने दीप जलाकर दिया एकजुटता का संदेश

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

नगर के खिलाड़ियों ने सोमवार रात को दीपावली पर्व पर खेल मैदान पर पहुंचकर दीपों की रोशनी की। मैदान को दीप जलाकर सजाया। दीपों से रोशन मैदान पर खिलाड़ियों ने संगठित होकर कार्य करने और खेलों में पूरे क्षेत्र का नाम रोशन करने का संकल्प लिया। नगर के सांदीपनि स्कूल के खेल मैदान पर रोजाना सुबह-शाम बड़ी संख्या में खिलाड़ी प्रैक्टिस करने पहुंचते हैं। खेलने के साथ खिलाड़ियों ने अब मैदान के रखरखाव की भी जिम्मेदारी ली है। ऐसे में मैदान की सफाई सहित अन्य कार्य खिलाड़ियों द्वारा किए जा रहे हैं। दीपावली पर नगर के सॉफ्टबॉल और रग्बी के खिलाड़ियों ने मैदान पर पहुंचकर दीप जलाए। कोच जितेश पवार और अमित के साथ खिलाड़ियों ने दीप से दीप जलाकर पूरे मैदान को रोशन किया। खिलाड़ियों ने खेल और टीम भावना का संदेश देते हुए त्योहार मनाया। कोच जितेश पवार ने बताया मैदान पर दीप जलाने का उद्देश्य सहयोग, अनुशासन, समर्पण और रचनात्मकता को बढ़ावा देना है।

विधायक देशमुख बोले-हर घर में पालें एक गाय

मुलताई में बघोड़ा की मां गायत्री गौशाला में गोवर्धन पूजा

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

मुलताई के बघोड़ा स्थित मां गायत्री गौशाला में बुधवार सुबह 11 बजे गोवर्धन पूजा और गोपूजन कार्यक्रम हुआ। पशुपालन एवं डेयरी विभाग की देखरेख में हुए इस कार्यक्रम में विधायक चंद्रशेखर देशमुख मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। उन्होंने ग्रामीणों से कहा कि हर घर में एक गाय का पालन जरूर होना चाहिए, गाय परिवार की आर्थिक स्थिति तो सुधारती है, इसका धार्मिक महत्व भी बहुत है। इस अवसर पर विधायक देशमुख ने हर घर में एक गाय पालने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि गौ माता के प्रति आस्था और सेवा से पर्यावरण संरक्षण का संदेश मिलता है।
कार्यक्रम की शुरुआत गोशाला की आकर्षक सजावट से हुई, जहां परिसर को फूलों और रंगोली से सजाया गया था। पूजा से पहले गायों को स्नान कराकर सुंदर वस्त्रों, फूलमालाओं और तिलक से सजाया गया। गौ माता की आरती के साथ विधि-विधान से पूजा शुरू हुई। गोशाला परिसर में गाय के गोबर से पारंपरिक गोवर्धन पर्वत की आकृति बनाई गई, जिसे फूलों, खील-बताशों और दीपों से सजाकर पूजा-अर्चना की गई। ग्रामीण कमलेश आदवारे ने बताया कि यह पर्व भगवान श्रीकृष्ण और गौ माता के प्रति आस्था, सेवा तथा पर्यावरण संरक्षण का संदेश देता है। उन्होंने कहा कि गौ माता में सभी देवी-देवताओं का वास माना गया है, इसलिए उनकी पूजा साक्षात देवी लक्ष्मी की आराधना के समान है। कार्यक्रम में प्रभात पट्टन तहसीलदार राजेश कुमार दुबे, मुलताई एसडीएम राजीव कहार, पशुपालन विभाग से डॉ. पवन कुमार कौरेति और सुमरत धुर्वे सहित ग्राम पंचायत बघोड़ा के सरपंच श्रीमती सुनंदा महाले, सचिव राजू झरबड़े और गौशाला अध्यक्ष सुभाष गनेशे सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक मधुवर मोहन द्विवेदी द्वारा इंडिपेंडेंट प्रेस, 11 प्रेस काम्पलेक्स, एमपी नगर जोन-1 भोपाल 462023 म.प्र. से मुद्रित एवं 201 ब्लाक ई, सागर प्रीमियम टावर जेके हॉस्पिटल, कोलार रोड, भोपाल म.प्र. से प्रकाशित।
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा) संपादक- सुनील यादव, समाचार संपादक- राहुल कौशिक। फोन नं. 0755-4262585-9425006706, मो. नंबर 9826697203, 9926288166, RNI.No. MPHIN/2020/78949